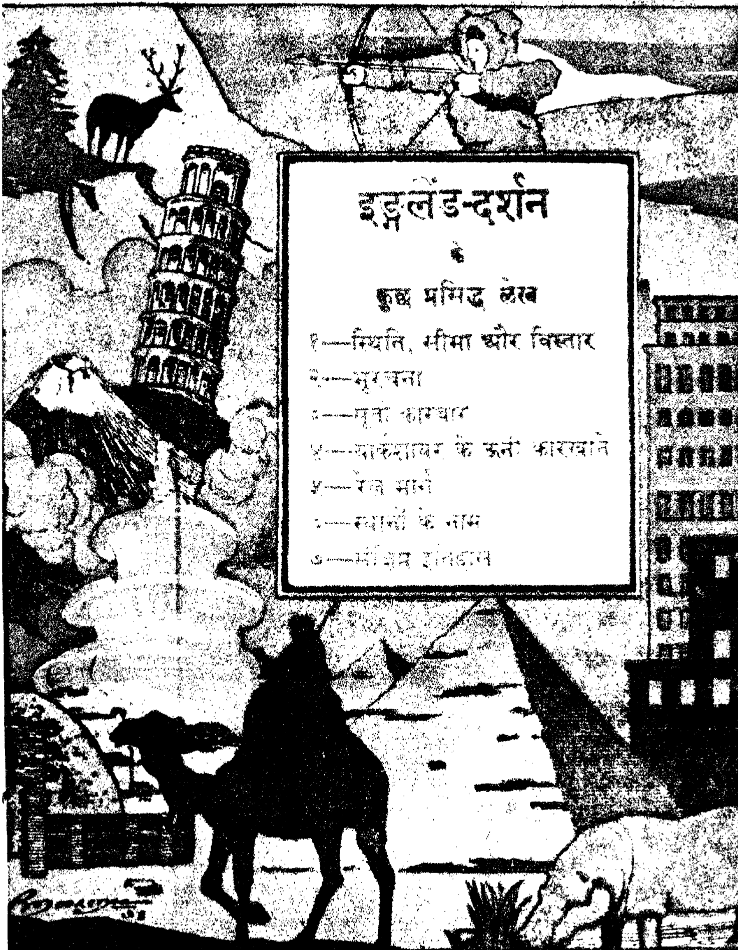
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—५४



भूगोल कार्यालय — प्रयाग

मार्च, १९४४] **देश-दर्शन** [चैत्र २००१

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ५] **इङ्गलैंड-दर्शन** { संख्या १० / पूर्ण संख्या ५४

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

१—स्थिति सीमा, तथा विस्तार १

२—भू-रचना ३

३—टेम्स ११

४—जलवायु १४

५—गेहूँ १६

६—इङ्गलैंड के ग्वाले १८

७—गड़रिये १९

८—इङ्गलैंड के मछुये २१

९—कोयला २७

१०—सूती कारबार ३०

११—यार्कशायर के ऊनी कारखाने ... ३३

१२—कुम्हार का जिला (पाटरीज़) ... ३५

१३—जहाज बनाने का कारबार ... ३८

१४—लन्दन ३९

१५—रेल मार्ग ४०

१६—स्थानों के नाम ४६

१७—झीलों का जिला (लेक डिस्ट्रिक्ट ... ४९

१८—संक्षिप्त इतिहास ५२

स्थिति

स्थिति सीमा, तथा विस्तार

संसार के सब से बड़े साम्राज्य का स्वामी ब्रिटेन है। ब्रिटिश द्वीप समूह से आयरलैंड को पृथक कर देने पर शेष देश ब्रिटेन नाम से विख्यात है। ब्रिटेन में स्काटलैंड, इंगलैंड और वेल्स शामिल है। इनमें सर्व प्रधान इङ्गलैंड है। ब्रिटेन प्रायः ५० और ६० उत्तरी अक्षांशों के बीच में स्थित है। इङ्गलैंड दक्षिण में प्रायः ५० उत्तरी अक्षांश से ५६ उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। ब्रिटिश द्वीप समूह इस समय योरुपीय महाद्वीप के पश्चिमी सिरे पर प्रधान स्थल से अलग हैं। लेकिन अब से लाखों वर्ष पूर्व वे महाद्वीप के अंग थे। योरुप का पश्चिमी सिरा आयरलैंड के पश्चिम में कुछ दूर तक निकला हुआ था। स्थल के डूब जाने से कुछ ऊंचे भाग द्वीपों के रूप में शेष बच गये। जहां निचले भाग थे वहां डोवर के पास २१ मील चौड़ा इङ्गलिश चेनल इङ्गलैंड को फ्रांस से अलग करने लगा। १०० मील चौड़ा आयरिश सागर और सेंट जार्ज चेनल ब्रिटेन को आयरलैंड से अलग करने लगे। महाद्वीप निमग्न तट (कान्टीनेन्टल शेल्फ) पर उथले समुद्रों से घिरे

होने के कारण अटलांटिक महासागर की ठंडी और अत्यन्त ठंडी धारा यहां तक न आ सकी एक ओर अमरीका और दूसरी ओर पश्चिमी योरुप के कारबारी प्रदेश के बीच में स्थित होने से इङ्गलैंड के व्यापार में आशातीत बृद्धि हुई। प्राचीन समय में समुद्र से घिरे होने के कारण ब्रिटेन को बड़ा लाभ हुआ। जहां पूर्वी योरुप में कई बार देशी आक्रमण हुये वहां ब्रिटेन इनसे प्रायः सुरक्षित रहा। इसी स्थिति के कारण उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में नेपोलियन और वर्तमान युद्ध में हिटलर ब्रिटेन पर अपना अधिकार न जमा सके। इसी स्थिति ने अन्वेषण काल में ब्रिटेन को जहाज़ी बेड़ा बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित किया जिसकी सहायता से ब्रिटेन ने भूमंडल के बहुत बड़े भाग पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया।

ब्रिटेन की अधिक से अधिक लम्बा ७०० मील है। इसके दक्षिणी भाग में इङ्गलैंड है। इङ्गलैण्ड का सब से अधिक चौड़ा भाग २५० मील है। इसको तंग भाग २५ मील से कुछ ही अधिक है। अधिक कटाफटा होने से इङ्गलैण्ड का समुद्र-तट २३५० मील लम्बा है।

इसी में वेल्स का ३७५ मील लम्बा तट शामिल है। इङ्गलैंड का क्षेत्रफल ५०८५१ वर्गमील है जो अपने संयुक्त प्रान्त का आधा भी नहीं है। यदि वेल्स को भी इसमें शामिल कर लें तो दोनों का सम्मिलित क्षेत्रफल ५८३२४ वर्ग मील है। नार्थ सागर, इंगलिश चेनल और डोवर प्रणाली इंगलैंड को पश्चिमी योरुप के देशों से अलग करते हैं। इंगलैंड और आयरलैंड के बीच में आयरिश सागर है। अधिक आगे विशाल अटलांटिक महासागर ब्रिटेन को अमरीका से अलग करते हैं।

भूरचना

अगर हम्बर नदी के मुहाने से तोर खाड़ी तक एक एक रेखा खींची जावे तो इङ्गलैंड का उच्च प्रदेश इस रेखा के पश्चिम की ओर होगा। निचला भाग इस रेखा के पूर्व की ओर रहेगा। ऊंचा भाग पश्चिम की ओर होने से इस भाग की अधिकतर नदियां पूर्व की ओर बहती हैं। जो नदियां पूर्व की ओर बहती हैं वे अधिक लम्बी हैं। पश्चिम की ओर बहने वाली नदियां छोटी हैं। थोड़ी थोड़ी दूर पर नगर बसे हैं। ऊंचे पहाड़ी

प्रदेश में प्रायः खनिज पाये जाते हैं। जहां लोहा और कोयला पास पास पाया जाता है वहां कारबारी नगर बस गये हैं। उत्तर की ओर पीनाइन पर्वत श्रेणी रीढ़ के समान इंगलैंड के बीच में होकर चली गई है। इस पहाड़ी से नदियां निकल कर 'डेल' नाम की घाटियां बनाती हैं। कुछ नदियां पूर्व की ओर और कुछ नदियां पश्चिम की ओर समुद्र में गिरती हैं। पूर्व की ओर बहने वाली कई छोटी छोटी धाराओं के मिलने से ऊज़ नदी अपना जल हम्बर की विशाल एस्चुअरी (खुले मुहाने) में गिराती है। एअर नाम की छोटी नदी ने पीनाइन पर्वत को काटकर रेल, सड़क और नहर के लिये मार्ग बना दिया है। पीनाइन के उत्तरी भाग में टाइन नदी ने पर्वत को काट कर इसी प्रकार का मार्ग बनाया है।

उत्तर-पश्चिम की ओर पीनाइन पर्वत-श्रेणी के केम्ब्रियन पहाड़ियों से जुड़ी हुई है। इस ओर इंगलैंड की ऊंची ऊंची चोटियां हैं। इनमें सब से अधिक ऊंची चोटी सीफेल है। केम्ब्रियन पहाड़ियों के बीच में विचित्र घाटियां हैं। इनका पानी ऊंचे भाग की झीलों में पहुँचता है। इनमें विन्डरमियर झील सब से अधिक

ऊंचाई पर हैं। इंगलैंड का यह भाग झीलों का जिला कहलाता है। इसका सुन्दर दृश्य देखने और पहाड़ियों की चोटियों पर चढ़ने के लिये दूर दूर से आते हैं।

प्रायः सौ वर्ष पहले समस्त पीनाइन प्रदेश देहाती था। यहां बहुत कम लोग रहते थे। यह लोग ऊन के लिये कुछ भेड़ें पालते थे। कुछ स्थानों पर ऊन बुनने का काम होने लगा पुरानी ऊन की पनचक्कियां उन स्थानों पर थी जहां पानी अधिकता से मिलता था। उन्नीसवीं सदी में पीनाइन के दोनों ओर कोयले की खानें मिली। कोयले के मिलने से मशीनें भाप के जोर से चलने लगीं। कुछ ही समय में पीनाइन के दोनों ओर वाले मैदान की सूरत बदल गई। जहां पहले वीरान स्थान थे। वहां तरह तरह के कारखानों के खुल जाने से बड़े बड़े कारबारी नगर खुल गये। काम्ब्रियन प्रदेश में कोयले की कमी थी। अतः इस ओर आबादी अधिक नहीं बढ़ी। यार्कशायर के वेस्टराइडिंग जिले में कोयले की खानें जिले के मध्य भाग में होकर चली गई हैं। यहीं ऊनी कारखाने स्थापित हो गये। स्थानीय ऊन से एक भी ऊनी कारखाने का काम नहीं चल सकता

है। अतः बहुत सी ऊन आस्ट्रेलिया से आती है। यार्कशायर के कोयले के क्षेत्र के सामने दूसरी ओर लंकाशायर की कोयले की खानें हैं। यहां सूती कारबार है। इस ओर की नम जलवायु सूत कातने और बुनने के लिये विशेष रूप से अनुकूल है। इसमें धागा नहीं टूटता है। लिवरपूल बन्दरगाह में अमरीका और दूसरे देशों से अपार रुई आती है। लिवरपूल से मैंचेस्टर तक जहाजी नहर बना दी गई इसमें मीलों तक पक्के घाट बने हैं। यहां से रुई जिले के प्रायः सभी कारबारी नगरों को जाती है। लन्दन को छोड़ कर इंगलैंड का कोई भाग इतना घना बसा नहीं है जितना यह सूती कारबार का प्रदेश है। यहां नगर इतने पास पास हैं कि वे प्रायः एक दूसरे को छूते हैं। इस भाग की जनसंख्या समूचे स्काटलैंड की जन संख्या के बराबर है। मैंचेस्टर नगर और इसके बन्दरगाह लिवरपूल में २० लाख से ऊपर मनुष्य रहते हैं। यहां रुई को लाने और सूती माल को भेजने के लिये नहरों और रेलवे लाइनों का जाल सा बिछा हुआ है। यहां हर घाटी में सूत कातने और कपड़ा बुनने की

असंख्य मिलें हैं। लंकाशायर का अधिकतर भाग निचला चपटा मैदान है। इसके समुद्र तट के पास कहीं कहीं ७० फुट ऊँचे रेतीले टीले हैं। पूर्व की ओर खुले हुये मूर हैं यहां कोई कोई चोटियां १००० फुट से अधिक ऊंची हैं। कहीं कहीं दलदली झीलें हैं जिनसे तेज बहने वाली छोटी छोटी नदियां निकलती हैं। यहां की मर्सी नदी बड़े व्यापारिक महत्व की नदी है। दलदली झीलों से पीट निकाला जाता है। इस जिले के उत्तरी नगरों (बर्नले एक्रिंग्टन, ब्लैक बर्न और प्रेस्टन) में कपड़ा बुनने का काम होता है। दक्षिण की ओर स्थित बोल्टन, बरी रोचडेल, और ओल्डम नगरों में अधिकतर सूत कातने का काम होता है। इस सूती व्यापार का प्रधान केन्द्र मैंचेस्टर है। प्रधान बन्दरगाह लिवरपूल है। लिवरपूल में गुलामों, तम्बाकू और शक्कर से व्यापार का आरम्भ हुआ। लेकिन यहां इस समय सर्व प्रधान व्यापारिक वस्तु रुई है। इस कारबारी प्रदेश में रुई के अतिरिक्त लिवरपूल में सिगरट बनाने मैंचेस्टर में रेशमी कपड़ा और इंजीनियरी का सामान बनाने का काम होता है। रोचडेल में फेनेल बनाने और ओल्डम में मशीन बनाने

का काम होता है। विगन में कोयला निकालने लोहा गलाने और इंजीनियरी का काम होता है। रसायन और शीशा बनाने का काम विडनेस और संट हेलेन्स में होता है। उत्तर में स्टेफर्ड शायर कोयले की खान के पास चिकनी मिट्टी पाई जाती है। यहां लोग चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करते हैं। यह जिला पाटरीज (मिट्टी के बर्तनों का जिला नाम से प्रसिद्ध है। दक्षिणी स्टैफर्ड शायर में कोयला और बढ़िया कच्चा लोहा पास पास पाया जाता है। इसी से यहां कच्चा लोहा साफ करने के बड़े बड़े कारखाने हैं। इनकी चिमनियों से इतना धुआं निकलता है कि इस जिले को ब्लैक कंट्री या काला देश नाम से पुकारते हैं। जब लोहा साफ हो जाता है तब इस लोहे से तरह तरह का सामान बनाते हैं। बर्मिङ्घम में धातु की कई चीजें बनाई जाती हैं।

इँगलैंड का मध्यवर्ती मैदान उत्तम कृषि प्रदेश है। यह गोचर भूमि भी अच्छी है। यहां के लोग कृषि कार्य में लगे हैं। इस भाग के बड़े नगरों में पड़ोस के बड़े खेतों और गांवों की उपज बिकने आती है। पश्चिमी

भाग में वर्षा की अधिकता और आर्द्र जलवायु होने से यहां सुन्दर घास होती है। इसी से यह भाग अच्छी जाति की गायों के लिये प्रसिद्ध है। चेशायर का पनीर मक्खन और दूध की अन्य चीजें इंगलैंड भर में प्रसिद्ध हैं। लेकिन इस जिले के कुछ भागों में कोयला भी पाया जाता है इसलिये यहां खेती के अतिरिक्त दूसरा कारबार भी होता है। किडरमिन्स्टर में बढ़िया दरी और कालीनें बनती हैं। वोर्सेस्टर के पड़ोस में चिकनी मिट्टी होने से वहां चीनी मिट्टी के बर्तन बनते हैं। लीसेस्टर में जूते बनते हैं।

इंगलैंड का सबसे नीचा भाग वाश के समीप है। यह भाग समुद्र तल से कुछ ही फुट ऊँचा है। कुछ स्थानों में हालैंड की भांति यहां भी समुद्र के पानी को रोकने के लिये बांध बना दिये गये हैं। पहले यहां दल-दल बहुत थे। इसी से यह भाग प्रायः फेन्स कहलाता है। लेकिन यहां के दलदल सुखा दिये गये। उनके सूखने से उपजाऊ भूमि निकल आई। इँगलैंड के पूर्वी भाग में काफी धूप होती है। यहां की जलवायु कुछ खुश्क है। यहां गेहूँ पैदा होता है। इसके पास वाले

नगरों में गेहूँ की मंडियाँ हैं। इसकी उपजाऊ भूमि में आलु और फल भी बहुत होते हैं। इँगलैंड के पूर्वी तट के सामने प्रसिद्ध डागर बैंक में मछलियों का अड्डा है। अतः इस तट के लोग मछली पकड़ने के काम में लगे हैं। यारमाउथ और ग्रिम्स्बी से बहुत सी मछलियां प्रतिदिन लन्दन और दूसरे नगरों को भेजी जाती हैं। इंगलैंड के दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी भाग कोयले की खानों से बहुत दूर है। यहाँ कारखानों का प्रायः अभाव है। यहां खेती होती है अथवा चरागाहों में ढोर चराये जाते हैं। कोट्सवोल्ड पहाड़ियों से निकलकर टेम्स नदी इसी निचले भाग में बहती है और धीमी चाल से आगे बढ़कर नार्थ सागर में एस्चुअरी बनाती है। ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी और संसार का सब से बड़ा नगर लन्दन इसके मुहाने के पास ही स्थित है। टेम्स के दक्षिण में खड़िया की पहाड़ियों की दो पंक्तियां है। इन्हें नार्थ और साउथ डाउन्स कहते हैं। इन पर सूखी पतली घास होती है। यह भेड़ों के चरने के लिये बड़ी अच्छी होती है। डाउन्स के बीच में वेल्ड की पहाड़ियां हैं। इन पर पहले जंगल बहुत था।

यह केन्ट को सकेक्स से अलग करती हैं। दक्षिणी तट से कुछ ही दूरी पर आयल आफ वाइट (द्वीप) स्थित है जो पोर्टस्मथ बन्दरगाह की रक्षा करता है। पोर्टस्मथ बन्दरगाह ब्रिटेन का एक बड़ा जहाज़ी अड्डा है।

टेम्स

इंगलैंड की सब से बड़ी नदी टेम्स है। यह ३५० फुट की ऊंचाई पर कोट वोल्ड की पहाड़ियों से निकलती है। ऊपरी भाग में यह इस समय भी अपनी घाटी को कुछ काटती रहती है। वहां इसका मार्ग सपाट है। अपने मार्ग के प्रथम १५ मील में टेम्स १०० फुट नीचे उतर आती है। शेष २०० मील में यह २५० फुट नीचे उतर कर समुद्र में गिरती है। इसकी समस्त लम्बाई २१५ मील है। निकास के पास टेम्स के पड़ोस में खड़िया की चट्टानें हैं। आक्सफर्ड के समीप वाली धाराओं की तली चिकनी मिट्टी की बनी है।

पुराने समय के लोग टेम्स में नावों द्वारा बहुत सफर करते थे। वे इस नदी को पिताटेम्स के नाम

से पुकारते थे। आज कल नदी में नये ढङ्ग की नावें चलती हैं।

जब टेम्स नदी ऊंचे भाग को छोड़कर आक्सफर्ड के समीप आती है तब यह बड़ी शान्त हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु में इस नदी पर नावों की दौड़ होती है। नदी इतनी चौड़ी नहीं है कि दौड़ में सम्मिलित होने वाली नावे एक दूसरे के बगल में खड़ी हो सकें।

वे नियत दूरी पर खड़ी होती हैं। नदी से आक्सफर्ड की इमारतों के गुम्बदों और चोटियों का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है।

आक्सफर्ड के नीचे टेम्स नदी सुन्दर चरागाहों और जंगली फूलों के बीच में बहती हुई रीडिंग नगर में पहुंचती है। आजकल यहां बगीचे और बिस्कुट के कारखाने हैं। पुराने समय में यह अपने गिरजे के लिये प्रसिद्ध था।

रीडिंग के नीचे टेम्स नदी लन्दन वासियों के खेलने की वस्तु हो जाती है। शहरी जीवन से थके हुए लन्दन निवासी यहां नाव चलाने और नदी के समीपवर्ती घास के मैदान में तरह तरह के खेल खेलने आते

हैं। कुछ लोग चपटी तली वाली नावों पर ही रहते हैं। नाव के ऊपर लकड़ी का कमरा बना होता है। रीडिंग के नीचहेनलीनावों की दौड़ के लिए प्रसिद्ध है।

अधिक आगे चलने पर नदी तट के ऊपर खड़ा हुआ विंडज़र कासेल मिलता है। यहीं इंगलैंड के पुराने समय के राजा रहते थे। विंडज़र के सामने नदी के दूसरे किनारे पर इटन का प्रसिद्ध स्कूल है। इस स्कूल के लड़के नदी में नाव चलाते हैं। तैरते हैं और तरह तरह के खेल खेलते हैं। विंडज़र के आगे नदी तट पर बसे हुये कई नगर मिलते हैं। जब समुद्र ७० मील दूर रह जाता है तभी नदी का पानी खारा होने लगता है। पानी के स्वाद के अतिरिक्त नदी के रूप में भी अन्तर पड़ने लगता है। अब यह नदी खेल और मनोविनोद के बदले विशाल व्यापारी नदी हो जाती है। इसका जल गहरा हो जाता है। तरह तरह के माल से लदे हुए जहाज़ इसके ऊपर चलते हैं। इसके किनारे पर मज़बूत बाँध और घाट बने हैं। इससे सामान उतारने में सुविधा होती है।

जलवायु

ब्रिटिश द्वीप समूह ५० (लिजार्ड अन्तरीप) और ६० (शाट लैंड द्वीप) उत्तरी अक्षांशों के बीच में फैले हुये हैं। यह शीतोष्ण कटिबन्ध के अक्षांश हैं जहां ग्रीष्म ऋतु गरम और छोटी होती है। शीतकाल लम्बा और ठंडा होता है। लेकिन ब्रिटिश द्वीप समूह पर अटलांटिक महासागर, गल्फ स्ट्रीम और पछुआं हवाओं का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसी से यहां की जलवायु इन्हीं अक्षांशों में स्थित दूसरे स्थानों से कहीं अधिक अच्छी है। यहीं का शीतकाल कभी अधिक ठंडा नहीं होने पाता है।

शीतकाल की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु अधिक लम्बी होती है। गरमी की ऋतु में दोपहर के समय सूर्य क्षितिज के ऊपर ६० अंश का कोण बनाता है दिन अधिक लम्बे होते हैं। प्रायः १६ घंटे तक सूर्य का प्रकाश रहता है। सूर्य ४ बजे सवेरे निकलता है और शाम को ८ बजे छिपता है। इतना लम्बा दिन होने पर भी समुद्र की समीपता के कारण दिन में अधिक गरमी नहीं पड़ती है। इस ऋतु में अटलांटिक महासागर की ओर से आनेवाली पछुआं हवायें कुछ शीतकाल होतो हैं और

ब्रिटेन में गरमी अधिक नहीं बढ़ने देती है। पश्चिमी भाग अधिक शीतल होते हैं।

दिसम्बर के महीने में सूर्य दोपहर के समय क्षितिज से केवल १५ अंश ऊपर उठता है। दिन केवल ८ घंटे का होता है। सूर्य प्रातःकाल ८ बजे निकलता है और शाम को ४ बजे छिप जाता है। फिर भी यहां मध्य योरुप के समान ठंड नहीं पड़ती है। गल्फ स्ट्रीम की गरम धारा और पछुआं हवायें यहां लगातार गरमी पहुँचाती रहती हैं। पश्चिमी भाग में पूर्वी भाग से अधिक गरमी पहुंचती है। इस प्रकार दक्षिणी-पश्चिमी आयरलैंड का वेलेंशिया नगर लन्दन की अपेक्षा गरमी में अधिक शीतल और सर्दी में अधिक ठंडा रहता है। सरदी की ऋतु में बहुत कम दिन ऐसे ठंडे होते हैं कि मनुष्य खुली हवा में काम न कर सके। ब्रिटेन में पछुआं हवायें ही पानी लाती है। यह हवायें पश्चिमी भाग में पहले पहुँचती है अतः ब्रिटेन के पश्चिमी भागों में पूर्वी भागों की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है। सरदी में कभी कभी यह हवा पानी बरसाने के बदले बरफ

गिराती हैं। अधिक ऊंचे भागों में अधिक वर्षा होती है। पूर्वी मैदान कुछ खुश्क है।

गेहूँ

अँग्रेज़ किसान का जीवन बड़ा कठिन होता है। वह सूर्योदय होते ही खेत में काम आरम्भ कर देता है और सूर्यास्त तक काम करता रहता है।

इंगलैंड में अगस्त के अन्त में दिन कुछ छोटे और ठंडे होने लगते हैं। तभी वह अपने घोड़ों और जीन को निकाल कर हल जोतने लगता है। इंगलैंड में हल खींचने के लिये बैलों के स्थान पर घोड़े जोते जाते हैं। हलकी मूठ दबाने और हल से मिट्टी को उलटने और पलटने में बड़ा जोर पड़ता है। शीत काल में भी दो तीन बार खेत जोते जाते हैं। जुलाई के बाद कुछ सप्ताह तक खेत खाली छोड़ दिये जाते हैं। शीत काल की जुलाई में घोड़ों और हलवाहे के मुंह से भाप निकलती रहती है। इसी समय भूखी चिड़ियां खेतों के कीड़े मकोड़ों को चट कर जाती हैं।

इसके बाद खेत बोने के लिये समतल बनाये जाते हैं। पहले हाथों से खेत बोये जाते थे। आजकल मशीनों से खेत बोये जाते हैं। बोते समय चिड़ियों का झुंड बीजों को खाने के लिये आ जाता है। इन्हें हांकने में किसानों के लड़के और लड़कियाँ बड़ी सहायता देती हैं। शीतकाल की वर्षा से खेत एकदम भीग जाते हैं। बसन्त ऋतु में सूर्य की धूप कुछ गरमी कर देती है। इससे बीजों के अंकुर फटने लगते हैं। ग्रीष्म ऋतु में दिन अधिक बड़े और गरम होते हैं। तभी यहां गेहूँ तेज़ी से बढ़ता है। ग्रीष्म के अन्त में गेहूँ पक जाता है। इस समय किसान को सब से अधिक काम रहता है। पहले गेहूँ के खेत हाथ और हँसिया से काटे जाते थे। आजकल वे हार्वेस्टर या काटने की मशीन से काटे जाते हैं। इस मशीन को दो घोड़े खींचते हैं। किसान इसके एक स्थान पर बैठकर घोड़ों को चलाता रहता है। यह मशीन गेहूँ को काटकर पूले भी बांधती जाती है। कुछ किसान काटने वाली मशीन के साथ साथ गाहने या माड़ने वाली मशीन का भी प्रयोग करते हैं। इससे भूसा और गेहूँ का दाना अलग हो जाता है।

इङ्गलैंड के ग्वाले

इङ्गलैंड के पश्चिमी भागों में अधिक वर्षा होती है। वर्षा की अधिकता से यहाँ बड़ी रसीली लम्बी घास होती है। इन चरागाहों में गायें पाली जाती हैं। इसी से समरसेटशायर और डेवन शायर के मैदान इङ्गलैंड भर में क्रीम (मलाई) के लिये प्रसिद्ध हैं। वेल्स के पठारों और पीनाइन पहाड़ियों के बीच के मैदान उत्तम चीज़ (पनीर) के लिये प्रसिद्ध हैं। हियरफर्ड शायर की गायें बहुत बढ़िया होती हैं। इङ्गलैंड के बीच वाले मैदानों में भी ढोर पाले जाते हैं। इनके चमड़े से जूते बनाये जाते हैं। ढोर पालने वाले अपना मक्खन, पनीर और दूध पड़ोस के कारबारी नगरों में बेंच देते हैं। अंग्रेज़ी ग्वाले घास के अतिरिक्त कुछ पौधों की जड़ें, बिनौले और अलसी की खली अपने जानवरों को खिलाते हैं।

अंग्रेज़ी ग्वाला अपने बड़े खेत की ही घास अपने ढोरों को चराता है। वह उन्हें इधर उधर फिरने नहीं देता है। उसका घर बड़ा होता है। एक ओर गायों के बांधने के लिये स्थान होता है। ग्वालों को बड़ा

काम रहता है। सब से अधिक काम ग्वालिन करती है। गायें प्रतिदिन दो बार नियत समय पर दुही जाती हैं। कुछ गायें तीन बार दुही जाती हैं। गायों को बाड़े से चरागाह और चराने के बाद चरागाह से बाड़े तक लाने के काम में छोटे लड़के सहायता देते हैं। बहुत सा दूध प्रतिदिन बड़े बड़े कनस्तरों में भर कर स्टेशन को भेज दिया जाता है। यहां से यह पास वाले कारबारी नगर में पहुंचता है। कुछ दूध को मथ लिया जाता है। इससे मक्खन निकाला जाता है।

गाय के बाड़ों के पड़ोस में इधर उधर गिरे हुये दानों को मुर्गियां चुनती रहती हैं। ग्वाला इनके अंडे भी बेच लेता है। बड़े खेत में गायों के पानी पीने के लिये एक ओर तालाब होता है। इसमें उसकी पालतू बतखें तैरा करती रहती हैं।

गड़रिये

भेड़ों को लम्बी घास आर्द्र जलवायु अनुकूल नहीं होती है। वे छोटी घास और खुश्क जलवायु पसंद करती हैं। जिन पहाड़ी स्थानों में मिट्टी अधिक नहीं होती है

अथवा जहां खड़िया को चट्टानें हैं वहां छोटी घास होती है। खड़िया वाले भागों में प्रबल वर्षा होने पर भी पानी नीचे चला जाता है अतः यहां छोटो घास होती है। पीनाइन पहाड़ियों के पूर्वी ढालों पर यार्कशायर में बहुत भेड़ें पाली जाती हैं। पश्चिमी पूर्वी और दक्षिणी भागों में जहां खड़िया की चट्टानें हैं वहां भी भेड़ें पाली जाती हैं। कोट्स्वोल्ड, लिंकनशायर वोल्ड, चिल्टर्न पहाड़ियां और उत्तरी-दक्षिणी डाउन्स भेड़ों के पालने के लिये प्रसिद्ध हैं। ब्रिटेन की भेड़ों की ऊन बड़ी अच्छी होती है।

जिन दिनों में भेड़ बच्चा देती हैं। तब गड़रिये को उनकी देख भाल करने के लिये कभी कभी रात भर जागना पड़ता है। यदि इस समय बच्चों की ठीक ठीक देख भाल न की जावे तो वे मर जावें। बसंत ऋतु में भेड़ों के छोटे बच्चे जब इधर उधर कूदते और फुदकते हैं तो वे बड़े सुहावने मालूम होते हैं। इनकी टांगें अधिक बड़ी मालूम होती हैं। कुछ ही समय में उनके शरीर को ६ बड़ी और मुलायम ऊन ढक लेती हैं। ऊन कतरने के समय गड़रियों को बड़ा परिश्रम करना पड़ता है।

पहले यह ऊन मोटा ऊनी कपड़ा बनाने के लिये घर में ही काम आती थी। आज कल बड़े २ कारखाने वाले इस ऊन को मोल लेते हैं।

इंगलैंड के कई भागों में फल होते हैं। लेकिन दक्षिणी पूर्वी, दक्षिणी पश्चिमी और सेवर्न की घाटी फलों की उपज के लिये विशेष प्रसिद्ध है। इस भाग की भूमि उपजाऊ है। पानी पर्याप्त बरसता है। और फलों के पकने के लिये धूप भी हो जाती है। केण्ट में सेव, नाशपाती रसभरी और दूसरे फल बहुत होते हैं। हियरफर्ड, डेवन, कार्नवाल, सिली द्वीप और चेनल द्वीप फूलों और फलों के लिये प्रसिद्ध हैं।

इङ्गलैंड के मनुष्ये

उथले और ठंड समुद्रों में मछलियां बहुत होती हैं। ब्रिटिश द्वीप समूह समुद्र के ऐसे ही भाग में स्थित है जो अधिक गहरा नहीं है। यहां मछलियों के लिये नदियां अपार भोजन ले आती हैं। इङ्गलैण्ड के पूर्वी भाग में मछली मारने वाले अधिक रहते हैं। इसी ओर पश्चिमी योरुप और ब्रिटेन के बीच में डागरबैंक नाम

का मछलियों का सबसे बड़ा अड्डा है। यह उत्तरी (नार्थ) सागर का बड़ा और विशेष उथला (केवल ६ फुट गहरा) भाग है। कहीं कहीं ६ फुट से भी कम गहरा है। यहां मछलियों का भोजन बहुत है। इङ्गलैण्ड के पड़ोस में कई प्रकार की मछलियां पाई जाती हैं। पूर्वी तट पर ग्रिम्स्बी मछलियों का सबसे बड़ा बन्दरगाह है।

कुछ मछलियां पानी के ऊपरी भाग में रहती हैं इनको पकड़ने के लिये मछुये तैरने वाले जाल फैलाते हैं। कुछ मछलियां तली में बैठ जाती हैं। इनको पकड़ने के लिये तली में घसिटने वाला विशाल थैले के आकार का ट्रालर जाल छोड़ा जाता है।

जाल खींचने का काम धुआंकश नावों से लिया जाता है। मछुये रबर के बने हुये लम्बे लम्बे जूते पहनते हैं जो जांघों तक पहुँचते हैं। डागर बैंक के पास पहुंचने पर दो ट्रालर जाल एक साथ नाव के दोनों ओर से छोड़े जाते हैं। कुछ घंटों तक पानी के नीचे घसीटने के बाद नाव का कप्तान भाप लेता है। कि जाल मछलियों से भर गये हैं। तभी जाल तली

से ऊपर सावधानी से खींच लिया जाता है। जालों में तरह तरह की चमकीली मछलियां भरी होती हैं। नाव पर मछलियों को लाने के बाद वे साफ की जाती हैं और छोटी बड़ी अलग की जाती हैं। बड़ी बड़ी मछलियां बरफ़ के साथ नाव की टोकरियों में भर ली जाती हैं छोटी मछलियां समुद्र में फेंक दी जाती हैं। जब नाव मछलियों से भर जाती है तब वह बन्दरगाह पर लाई जाती है। ग्रिम्स्बी बन्दरगाह में मछलियों का बड़ा बाज़ार है। बहुत सी मछलियां लन्दन के मछली बेचने वाले सौदागर मोल ले आते हैं। कुछ मछलियां दूसरे नगरों में पहुँचती हैं।

ऊपर वाली मछलियों को पकड़ने के लिये बड़ा लम्बा जाल छोड़ा जाता है। इसे पानी के ऊपर तैरने के लिये इसमें कार्क लगा देते हैं। कभी कभी हज़ारों मछलियों का झुंड जाल में फंस जाता है और ड्रिफ्टर जहाज़ को बड़ा लाभ हो जाता है। लेकिन पानी के ऊपर तैरने वाली मछलियां एक स्थान पर नहीं रहतीं हैं। इसलिये मछलियों के झुंड की खोज में मछुओं को इधर उधर दूर तक भटकना पड़ता है। इंगलैंड के हज़ारों मनुष्य मछली पकड़ने के काम में लगे हैं।

देश दर्शन

फौलादी कारबार

जिस लोहे को हम काम में लाते हैं वह कच्चे लोहे के रूप में पृथिवी के भीतर से निकलता है। कच्चा लोहा सधारण कड़ी मिट्टी के समान दिखाई देता है। पहले कच्चे लोहे को भट्टी में गला कर साफ करते हैं। भट्टी में गलाने के लिये बहुत सा ईंधन खर्च होता है। इसी से इंगलैंड में लोहे को गलाने और साफ करने का काम उन स्थानों में आरम्भ किया गया जहां जंगल बहुत था। लेकिन कुछ ही समय में जंगल साफ हो गया। फिर (१७३५ ई० में) लोहे को गलाने के लिये कोयले का प्रयोग होने लगा। आज कल लोहे को साफ करने की विशाल भट्ठियां कोयले के कारखानों के पास बनीं हैं क्योंकि १ मन लोहा साफ करने के लिये तीन चार मन कोयला खर्च होता है।

कच्चा लोहा भट्ठियों की चोटी पर ऊपर से गिराया जाता है। इसे गलाने के लिये इसमें चूना मिला देते हैं। गिराने का काम छोटी छोटी गाड़ियों से लिया जाता है। अपार आंच में पिघल कर पिघला हुआ

लोहा भट्टी से बहकर बालू के गड्ढों में गिरा दिया जाता है। ठंडा होने पर यह ठोस लोहा हो जाता है। इसे पिग आइरन कहते हैं। इसे फिर गलाते हैं और कास्ट आइरन बनाते हैं। सस्ता सामान इसी से बनता है। लेकिन यह जल्दी टूटता है। अतः इसे फिर लाल करके और हथौड़ों से पीट कर आयरन या कमाया हुआ लोहा बनाते हैं। यह विशाल हथौड़े मशीनों से चलाये जाते हैं। इसके बाद इस लाल लोहे को भारी बेलनों के बीच में दबाते हैं। इससे लोहे का छुपा हुआ कचड़ा निकल जाता है और शुद्ध लोहा शेष रह जाता है।

पहले ब्रिटेन में न केवल लोहे और कोयले की अधिकता थी वरन् यह दोनों उपयोगी पदार्थ पास पास पाये जाते थे इससे ब्रिटेन में सबसे पहले फौलादी कारबार की जड़ जमाई गई। लंका शायर में फर्नेस, क्लीवलैंड पहाड़ियां शेफील्ड, बर्मिङ्घम के पास मिडलैंड इस कारबार के विशाल केन्द्र बने।

बर्मिंघम शहर इङ्गलैंड के प्रायः मध्य में स्थित है। लोहे के कारबार के लिये यह ब्रिटेन भर में सबसे अधिक

प्रसिद्ध है। बर्मिंघम के पड़ोस में और कई नगर इसी कारबार में लगे हैं। वोल्वरहैम्प्टन, वाल्साल वेस्ट ब्राम्बिच वेडनेस्बरी, आदि नगर फौलादी कारबार में लगे हुये हैं। यह नगर स्टैफर्डशायर के कोयले की खदानों के पास है। इस प्रदेश को काला प्रदेश या ब्लैक कंट्री कहते हैं। यहां लोहे की असंख्य भट्टियां और लोहे के कारखाने बनाये गये। यहां की भट्टियों से लगातार काला धुआं निकलता था। इस धुयें का काजल मीलों तक सभी स्थानों पर छा गया था। रात्रि के समय इन भट्टियों की चोटियों से इतनी लपट उठती थी कि दूर से इस प्रदेश में भयानक आग लगी हुई मालूम पड़ती थी। यह आग ज्वालामुखी के समान थी। यहां पर रहना अच्छा नहीं लगता था। आज कल भट्टियों की चोटियां ढाक दी गईं। इससे यहां कुछ स्वच्छता दृष्टि गोचर होने लगी।

मिडलैंड का सबसे बड़ा नगर बर्मिंघम है। यहां सीने की मशीनें, साइकिलें आदि फौलाद के अनेक सामान बनाये जाते हैं। वोल्वरहैम्प्टन ताला चाबी के लिये विशेष प्रसिद्ध है। डडले नगर में कीलें बनती हैं। रेडिच में पिन और सुइयां बनाई जाती हैं। इस प्रदेश में

आजकल बहुत सा कच्चा लोहा विदेशों (स्पेन, अल्जी-रिया, और स्वीडन) से आता है।

कोयला

हज़ारों वर्ष पहले ब्रिटेन की जलवायु अधिक उष्णार्द्र (गरम और तर) थी। यहां बड़े बड़े पेड़ों के विशाल वन थे। इसके बाद यहां की भूमि धंस गई। जहां घना बन था वहां उथल समुद्र हो गया। धीरे धीरे बन के ऊपर बालू और चिकनी मिट्टी की मोटी तहें बिछ गईं। इन तहों के दबाव और भीतर की गरमी से विशाल वन कोयले की खान में बदल गया। फिर ऊपरी धरातल कुछ ऊँचा हो गया। समुद्र का पानी बह गया सूखी भूमि निकल आई। इस भूमि के नीचे कोयले की खान दबी पड़ी रही। आज कल यह कोयला इङ्गलैंड के बड़े काम का है।

पीनाइन के पहाड़ियों के पड़ोस में कोयले की कई खानें हैं। यार्कशायर और नर्दम्बरलैंड की खानें पीनाइन के पूर्व में हैं लंकाशायर और कम्बरलैंड की

खानें पीनाइन के पश्चिम में हैं। मिडलैंड की कोयले की खाने' पीनाइन पहाड़ियों के दक्षिण में हैं।

वेलस की पहाड़ियों के समीप भी कोयले की कई खाने' हैं। दक्षिणी वेल्स की खाने' अधिक प्रसिद्ध हैं'। स्काटलैंड के निचले भागों में भी कोयले की कई खाने' हैं।

इङ्गलैंड का कोयला धरातल से कई सौ फुट नीचे है। कोयले तक पहुँचने के लिये मिट्टी की ऊपरी तहों को गहरा खोदना पड़ता है। खुदाई का काम बड़ी मूल्यवान मशीनों से करना पड़ता है। जब कोयले की खदान मिल जाती है तब कोयला निकालने के लिये वहां भीतर ही भीतर एक सुरंग सी बनानी पड़ती है। भीतर से कोयले को ऊपर लाने के लिये बड़े बड़े कटहरे या पिंजड़े काम में लाये जाते हैं। जब कोयला निकल आता है तब ऊपरी तहों की छत को रोकने के लिये खम्भे लगाये जाते हैं कभी कभी खोदते खोदते कोयले की सुरंगे एक मील लम्बी हो जाती है। ऐसी दशा में ऊपर से नीचे उतरने पर मज़दूर प्रायः एक मील भीतर ही भीतर चलने के बाद कोयला खोदने के स्थान पर

पहुँचते हैं खोदने के बाद मज़दूर कोयले को खुली हुई छोटी गाड़ियों में भरते हैं। इन गाड़ियों को सरलता से ले जाने के लिये नीचे ही नीचे रेल की पटरियां बिछा लेते हैं। कोयला इन्हें टट्टू खींचते हैं। कुछ बिजली से चलती हैं ऊपर खींचने के लिये ऊपर बड़ी इंजिन लगा रहता है। यह एक बड़ी मशीन को संभालता है जो कोयले से भरे हुये पिंजड़ों और छकड़ों को खींचती है। मशीन मोटे मोटे फौलादी रस्सों से छकड़ों को जकड़ कर उन्हें ऊपर खींचती है।

खान के नीचे काम करने वालों का जीवन बड़ा संकटमय होता है। कभी ऊपर से मोटी तहों की छत टूट पड़ती है और मज़दूर दब जाते हैं। कभी कोयले की खान में आग लग जाती है। पहले खानों में स्त्रियों और बच्चों को भी काम करना पड़ता था। फिर ब्रिटेन में एक कानून बना जिससे खान के भीतर स्त्रियों और बच्चों से काम करवाना बन्द कर दिया। आज कल खानों के भीतर प्रायः बिजली की रोशनी होती है और बिजली के ज़ोर से ही कोयला खोदा जाता है फिर भी खानों का जीवन अनेक आपत्तियों से भरा पड़ा है।

समय मौजूद हैं। कारखानों को हज़ारों मज़दूरों की आवश्यकता पड़ती है अतः जहां पहले निर्जन स्थान थे वहां सूती कारखानों के खुल जाने से बीसियों नगर बस गये जहां हज़ारों मनुष्य सूती कारबार में लगे हुये हैं। प्रेस्टन ब्लैक बर्न, एक्रिंग्टन और बर्नले नगरों में कपड़ा बुनने का काम होता है। ओल्डम, बोल्टन, रोशडेल और बरी नगरों में सूत कातने के विशाल कारखाने हैं। विडनेस और सेंट हेलेन्स में ब्लीच (सफेद) करने के रसायनिक पदार्थ और रंग पाये जाते हैं। यहां कपड़ा धोया और रंगा जाता है।

लेकिन सूती कारबार का प्रधान केन्द्र मैंचेस्टर है। यहां रुई और कपड़ा रखने की बड़ी बड़ी गोदामें हैं। बेचने के अतिरिक्त यहां कपड़ा बुनने और कातने की मशीनें भी तयार की जाती हैं। कपड़ा तयार करने का जितना अधिक काम ब्रिटेन के इस जिले में होता है उतना और कहीं नहीं होता है। लाखों मनुष्य इस कारबार में लगे हुए हैं। इस से उन्हें बड़ी आमदनी होती है।

इंगलैंड-दर्शन

यार्कशायर के ऊनी कारखाने

जिस प्रकार लंकाशायर के कोयले के क्षेत्र में सूती कार बार की जड़ जमी उसी प्रकार यार्कशायर के कोयले के क्षेत्र में ऊनी कारबार की वृद्धि हुई। पीनाइन के पूर्वी ढालों पर अँग्रेज़ गड़रिये पुराने समय से भेड़ों को चराने का काम करते थे। ऊज और उसकी सहायक नदियों में ऊन साफ करने के लिये उपयुक्त जल पर्याप्त मात्रा में मिल जाता था। लोहा साफ करने और मशीनों को बनाने के लिये यहां पास ही कोयले की अधिकता थी। ऊनी कपड़ा बनाने के लिये लीडस और ब्रेडफर्ड उसी प्रकार प्रसिद्ध है। जिस प्रकार सूती कारबार के लिये मैंचेस्टर प्रसिद्ध है।

हेलिफैक्स और हडर्सफील्ड आदि कई नगर ऊनी कारबार में लगे हुये हैं। कुछ ऊन इस समय भी पीनाइन के ढालों पर चरने वाली भेड़ों से मिल जाती है। पर बहुत सी ऊन आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिणी अमरीका, दक्षिणी अफ्रीका आदि विदेशों से आती है। जिस प्रकार मर्सी नदी के खुले चौड़े और गहरे मुहाने पर लिवरपूल का बन्दरगाह रुई के लिये उपयोगी है

उसी प्रकार हल बन्दरगाह ऊन जहाजों से ऊन के गट्ठे उतारने के लिये उपयोगी है। हल बन्दरगाह से भीतरी कारखानों को कोई नहर नहीं बनी है। अतः यह ऊन रेल मार्ग से ऊनी कारखानों के लिये जाती है। एक अन्तर और है। विदेशों से आने वाली बहुत सी ऊन पहले लन्दन या लिवर पूल बन्दरगाहों को जाती है। फिर वह वहां से यार्कशायर को जाती है।

यार्कशायर में ऊनी कारबार के बढ़ने के दो कारण हैं। पीनाइन के ढालों पर सुन्दर घास होती है जिसे भेड़ें बड़े चाव से चरती हैं। इससे भेड़ें बढ़िया ऊन से लद जाती हैं। यहां बहते हुये पानी की अधिकता है जो आरम्भ में पानी के जोर से चलने वाली ऊनी कपड़ा तयार करने की मशीनों को चलाने के लिये बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ। जब भाप के जोर से चलने वाली मशीनें ऊनी कपड़ा बुनने लगीं। तब यहां के कोयले की खानों से सहायता मिली। नये ऊनी कारखानें कोयले की खानों के पास बनाये गये। इन्हीं कारखानों के पड़ोस में हजारों मजदूर बस गये। लीडस इस कारबारी प्रदेश के मध्य में है। ब्रेडफर्ड, हडर्सफील्ड, हेलीफेक्स,

बार्न्सले, ड्यूसबरी और वेकफील्ड ऊनी कारबार के दूसरे प्रसिद्ध नगर हैं। प्रत्येक नगर की कोई न कोई विशेषता है। किसी में ऊन काती जाती है। किसी में बुनी जाती है। किसी में कम्बल बुने जाते हैं। किसी में कालीनें बुनी जाती हैं। किसी में यह सब काम होता है किसी में ऊनी थानों से ऊनी कपड़े बुने जाते हैं।

भेड़ की शरीर से ऊन कतरने के बाद यह ऊन धोई और साफ की जाती है। फिर यह रंगी और धुनी जाती है। इसके बाद इसके कपड़े बुने जाते हैं। यहां के बुने हुये ऊनी कपड़े न केवल ब्रिटेन वरन् संसार के प्रायः सभी भागों में पहुंचते हैं। ऊनी कपड़े बाहर भेजने के लिये हम्बर नदी के खुले हुये चौड़े और गहरे मुहाने पर स्थित हल बन्दरगाह बड़ा उपयोगी है।

कुम्हार का जिला (पाटरीज़)

नार्थ स्टैफर्डशायर के पाटरीज़ प्रदेश में काले प्रदेश में काले प्रदेश (ब्लैक कैंट्री) के समान ही चिमनियों से धुँआं निकलता रहता है। अब से २०० वर्ष पहले घास वाले प्रदेश में कुम्हारों के छोटे छोटे गांव इधर उधर

फैले हुये थे। उन दिनों कुम्हार अपने हाथ से ही स्थानीय मिट्टी के छोटे छोटे बर्तन बनाता था। आज कल चिकनी मिट्टी के बर्तन बनाने के लिये कई (स्टोक आन ट्रेण्ट, बर्सलेम, हैनले, लांग्टन, फेण्टन टन्स्टाल वोसेस्टर और डर्बी के नगर प्रसिद्ध हो गये हैं। मिट्टी के बर्तन बनाने वाली मशीनों को चलाने और बर्तनों को पकाने के लिये बहुत से कोयले की आवश्यकता पड़ती। खपरैल और नाली के नलों को बनाने के लिये इंगलैंड में आज कल भी स्थानीय भद्दी मिट्टी काम में आती है। लेकिन बढ़िया चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने के लिये कार्नवाल से सफेद मिट्टी मँगाई जाती है। इसे काओलिन मिट्टी कहते हैं। बालक्ले (गेंद की चिकनी मिट्टी) डार्सेट-शायर से आती है। चिकनी मिट्टी में फ्लिंट (एक प्रकार का पत्थर) भी मिलाया जाता है। यह उत्तरी फ्रांस में नार्मण्डी से आता है। कुछ विशेष प्रकार के बर्तन बनाने के लिये चिकनी मिट्टी में हड्डी की राख मिलाई जाती है। यह दक्षिणी अमरीका के अर्जेण्टाइन देश से आती है।

कार्नवाल की चिकनी मिट्टी समुद्री मार्ग से लिवर

फूल को आती है। कोयले की तरह यह भी बड़ी भारी होती है। इसको लाने के लिये मर्सी नदी से ट्रेण्ट नदी तक एक नहर बनाई गई। आज कल रेलगाड़ियां और मोटर लारियां इस चिकनी और मिट्टी के बर्तनों को ढोने में सहायता देती हैं। पहले सभी प्रकार के बर्तन कुम्हार अपने हाथ और चाक से बनाता था। बढ़िया बर्तन आज कल भी हाथ से ही बनाये जाते हैं। साधारण बर्तनों के बनाने के लिये ढांचे रहते हैं। यह ढांचे प्लास्टर आफ पेरिस (एक प्रकार के सीमेंट) के बनते हैं। ढांचे से निकलने के बाद गीली चिकनी मिट्टी के बर्तन बड़ी सावधानी से सुखाये जाते हैं। जिससे इनमें दरार न पड़े। फिर इन्हें भट्टी में पकाया जाता है। खपरैल, गमले आदि एक बार पकाये जाते हैं। बढ़िया बर्तन दो तीन बार पकाये जाते हैं। पहली बार पक जाने के बाद इन्हें चमकीले घोल में डुबा दिया जाता है। इसके बाद यह फिर आग में तपाये जाते हैं। कभी कभी इन बर्तनों पर बढ़िया कारीगरी करके इन्हें तीसरी बार पकाया जाता है।

जहाज बनाने का कारबार

आजकल जहाजों के बनाने में हज़ारों मन लोहा और फौलाद खर्च होता है। अतः जहाज़ों के बनाने के लिये समुद्र-तट के वे स्थान अधिक उपयुक्त हैं जो कोयले और लोहे की खानों के पास हैं और जो समुद्र की प्रचंड लहरों से सुरक्षित हैं। नर्दम्बर लैंड, कम्बर लैंड, दक्षिणी वेल्स और स्काट लैंड के कोयले की खानों के पास कई बन्दरगाह जहाज़ बनाने के काम के लिये उपयोगी हैं। नर्दम्बर लैंड को कोयले की खानों के पास टाइन, वियर और टीज़ नदियों के मुहाने के पास कई जहाज़ बनाने वाले बन्दरगाह हैं। टाइन नदी के मुहाने के पास न्यूकासेल, टाइनमाउथ और साउथ शील्ड बन्दरगाह हैं। वियर नदी के किनारे पर सण्डरलैंड बन्दरगाह हैं।

टीज नदी के मुहाने पर हार्टलपूल का बन्दरगाह है। टीज नदी के किनारे पर ही मिडिल्सबरों का बन्दरगाह है। यह ब्रिटेन भर में कच्चे लोहे को साफ करने का सब से बड़ा केन्द्र है। पहले अधिकतर कच्चा लोहा पड़ोस में क्लीवलैंड की खानों से आता

था। बेरो नगर लड़ाई के बड़े फौलादी जहाज़ों का बनाने के लिये प्रसिद्ध है। फर्नेस का कच्चा लोहा और कम्बरलैंड का कोयला इसके पास ही है। पर न केवल ब्रिटेन वरन दुनिया भर में जहाज़ बनाने का सब से बड़ा केन्द्र क्लाइड नदी का मुहाना है। इसके किनारों पर २० मील तक जहाज़ बनाने और इंजीनियरिंग के हाते हैं। ग्रीनाक, डम्बार्टन और पोर्ट ग्लास्गो के पास सब से बड़े कारखाने हैं।

लन्दन

लन्दन शहर इंगलैंड की राजधानी और न केवल ब्रिटिश साम्राज्य वरन संसार का सब से बड़ा शहर है। इसकी जन संख्या लगभग ८० लाख है। जितने मनुष्य समूचे अफगानिस्तान में रहते हैं प्रायः उतने ही मनुष्य इस अकेले शहर में रहते हैं। समस्त लंका द्वीप से लन्दन की संख्या प्रायः दुगुनी है। बाहरी मुहल्लों को मिलाकर लन्दन शहर का क्षेत्रफल ७०० वर्गमील है।

लन्दन का आरम्भ टेम्स नदी के मुहाने के सिरे

पर ऐसे स्थान पर हुआ जहां किनारे कड़े और कुछ ऊंचे थे। इसके अधिक ऊपर टेम्स में पानी उथला होने से पांज अवश्य था लेकिन किनारों के पास दलदल थे। अतः अब से २००० वर्ष पूर्व रोम विजेताओं ने ऊंचे किनारों को मिलाने के लिये पुल बनाया। पुल की रक्षा के लिये ऊंची भूमि उन्होंने पुल बनाया। कुछ ही समय में लन्दन मार्गों का केन्द्र बन गया। वर्तमान समय में लन्दन ब्रिटेन की सभी प्रधान लाइनों का जंकशन है। लन्दन से ब्रिटेन के सभी भागों को रेलगाड़ियां जाया करती हैं।

कलकत्ते की तरह लन्दन नगर समुद्र-तट से कुछ दूर है लेकिन टेम्स नदी में प्रतिदिन दोबार ज्वार आता है। अतः बड़े बड़े जहाज़ ज्वार के साथ लन्दन तक आ जाते हैं। ज्वार लन्दन के आगे तक पहुंचता है। लेकिन पुल बन जाने से जहाज़ लन्दन से आगे ऊपर की ओर नहीं जा सकते। लन्दन के डाक पूर्व की ओर टिलबरी तक चले गये हैं। किंग पंचम जार्ज डाक इतना गहरा है कि यहां बड़े से बड़े जहाज़ ठहर सकते हैं। जितना सामान समस्त ब्रिटेन में आता है

उसका एक तिहाई लन्दन बन्दरगाह में उतरता है। बड़े बड़े जहाज़ चीन की चाय, रेशम, चावल, भारतवर्ष लंका की रबर, मसाला, चाय, आस्ट्रेलिया की ऊन, न्यूज़ीलैंड की कटी हुई भेड़ें, कनाडा का गेहूँ, साइबेरिया के नमदे, अमरीका की रुई आदि सामान लगातार उतारते रहते हैं। ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी होने से यहां संसार के प्रायः सभी देशों के लोग आते जाते रहते हैं।

कोयले के क्षेत्रों से कुछ दूर होने पर भी लन्दन संसार का एक बड़ा कारबारी नगर है। यहां कई प्रकार का सामान बनता है। यहां मेज, कुर्सी, दिया सलाई, साबुन, मोमबत्ती, पावरोटी, बिस्कुट, शराब, सीमेण्ट, शीशा, कागज़, रसायनिक पदार्थ और कपड़ा बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं। लन्दन के पास वुलियच में सरकारी डाकयार्ड और बारूद घर है। यहां तोप, बन्दूक, गोली, बारूद और अन्य सैनिक वस्तुयें बनाई जाती हैं।

लन्दन के बाजार दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं। कहीं मांस कहीं मछली कहीं फल फूल और दूसरे सामान

बिकते हैं। लन्दन में बड़े बड़े बैंक हैं यहां व्यापारियों के अढ़तिये रहते हैं। राजधानी होने से यहां सम्राट का (बकिंघम) महल, पार्ल्यामेन्ट भवन और सरकारी कर्मचारियों के दफ्तर हैं। यह सब वेस्टमिनिस्टर में है पहले यह भाग लन्दन के द्वार से १ मील पश्चिम की ओर था। लन्दन के फैल जाने से इस समय यह लन्दन का अंग है। लन्दन में विश्व विद्यालय, म्यूज़ियम सेंटपालको गिरजा, चिड़िया घर आदि असंख्य दर्शनीय स्थान हैं। लन्दन शहर सचमुच इतना बड़ा है कि इसको समूचा देखने में महीनों लग सकते हैं। इसकी सड़कों पर मोटर ट्रैम आदि गाड़ियों की इतनी भीड़ रहती है कि यात्रियों की सुविधा के लिये यहां ज़मीन के नीचे बिजली के ज़ोर से चलने वाली अभ्यन्तर रेलवे बनाई गई है। हवाई हमलों के समय इन सुरंगों ने लन्दन के असंख्य लोगों को शरण दी। लेखक ने लन्दन को देखने में कई दिन लगाये। फिर भी लन्दन का बहुत थोड़ा भाग देख सका। अतः लेखक ने हवाई जहाज़ से लन्दन का दर्शन किया। लन्दन का क्राइडन एरोड्रोम संसार के बड़े विमानी

स्टेशनों में से एक है। लन्दन का विशेष विवरण लन्दन-दर्शन में मिल गये।

रेल मार्ग

१०० वर्ष पहले ब्रिटेन में रेलवे लाइनों का अभाव था। उस समय यहां के लोग पैदल, नाव या घोड़ा गाड़ियों पर यात्रा करते थे। उस समय एक नगर से दूसरे नगर को जाने के लिये सड़कों का आरम्भ हुआ। रेलमार्गों ने प्रायः सड़कों का ही अनुसरण किया। लन्दन सड़कों का प्रधान केन्द्र बन चुका था। अतः लन्दन ही रेल मार्गों का भी केन्द्र बना। चार प्रधान रेलवे लाइनों के स्टेशन लन्दन में अलग अलग हैं।

(१) ग्रेट वेस्टर्न रेलवे पैडिंग्टन स्टेशन से आरम्भ होती है। (२) लन्दन मिडलैंड और स्काटिश रेलवे यूस्टन स्टेशन से आरम्भ होती है। (३) लन्दन एण्ड नार्थ ईस्टर्न रेलवे लिवरपूल स्ट्रीट स्टेशन से आरम्भ होती है। (४) सदर्न रेलवे वाटरलू स्टेशन से आरम्भ होती है।

आजकल इन रेलवे लाइनों की लन्दन में और कई

अन्तिम स्टेशन बन गये हैं। ग्रेट ब्रिटेन एक लम्बा और तंग द्वीप है अतः लन्दन से उत्तर की ओर जाने-वाली रेलवे लाइनें अधिक लम्बी हैं। द्वीप के मध्य में पीनाइन पर्वत श्रेणी है अतः उत्तर की ओर जाने वाली एक लाइन पूर्वी किनारे से और एक पश्चिमी किनारे से जाती है। पूर्वी तट का मार्ग अधिक सुगम है। पहले टेम्सघाटी की निचली भूमि के ऊपर लाइन एक दम उत्तर की ओर जाती है। स्टेवनेज के पास यह चिल्टर्न पहाड़ियों के निचले भाग को पार करती हैं। फिर यह चौड़े भाग में होकर चूने की पहाड़ियों के सिरे के पास होती हुई ग्रांट हैम पहुंचती है। फिर यह ट्रेंट घाटी की निचली भूमि और यार्कशायर को उपजाऊ भूमि को पार करती हुई न्यूकासेल पहुंचती है। यहां पीनाइन पहाड़ियों और समुद्र के बीच में निचले प्रदेश की पेटी बहुत तंग लगभग १० मील चौड़ी जाती है। बर्विक के पास यह दक्षिणी उच्च प्रदेश को पार करती है और दुर्गम भाग में होकर एडिनबर्ग को जाती है।

पश्चिमी तट का मार्ग अधिक दुर्गम है पीनाइन

और वेल्स के बीच वाले निचले प्रदेश में पहुंचने के लिये लन्दन से रेल मार्ग उत्तर-पश्चिम को गया है। यह मार्ग ऊंचा नीचा है। कहीं चूने और कहीं खड़िया की चट्टानें पार करनी पड़ती हैं। सपाट चढ़ाई को बचाने के लिए पहाड़ियों में सुरंग बना लिये गये हैं। एक सुरंग रगबी के पास है। पीनाइन पहाड़ियों और वेल्स के बीच वाले द्वारको चेशायर गैव या मिडलैंड गेट (द्वार) कहते हैं। इसके आगे रेल मार्ग चेशायर के मैदान में होकर जाता है। क्रू के पास रेल की दो शाखायें हो जाती हैं। एक शाखा पश्चिम की ओर वेल्स के निचले भाग में में होकर होलीहेड को जाती है जहां से डब्लिन आयरलैंड के लिये स्टीमर मिलता है। दूसरी रेल शाखा उत्तर की ओर चली गई है। दूसरी शाखा दक्षिणी पश्चिमी इगलैंड को जाती है। लन्दन से दक्षिण-पूर्व की ओर जाने वाली लाइन तट पर स्थित स्वास्थ्यकर स्थानों या मछुओं के गांवों को जाती हैं। एक रेलवे लाइन लन्दन दक्षिण की ओर पोर्टस्मथ और साउथम्प्टन को जाती है। अधिक आगे दक्षिण-पश्चिम की ओर

एक लाइन डेवनशायर के सेव के बगीचों को जाती है। इनके अतिरिक्त और अनेक रेलवे लाइनों का इंगलैंड में जाल सा बिछा हुआ है। यह लाइन इंगलैंड के भिन्न-भिन्न भागों को तरह तरह का सामान ढोती है। सवारी गाड़ियों में मुसाफिरों को बड़ा आराम मिलता है। वे २६० मील प्रति घंटे की चाल से चलती हैं। रात्रि के समय सोने का भी आराम रहता है।

रेल गाड़ियों में सभी तरह की सुविधा होने पर भी मोटर लारियां नियत समय पर छूटती हैं। इनमें आराम से बैठने की जगह रहती है।

स्थानों के नाम

इंगलैंड के कुछ नाम बहुत पुराने हैं। यह नाम उन लोगों ने रक्खे जो यहां उस समय रहते थे। उन्होंने यह नाम अपनी उस समय की भाषा में ही रक्खे। इंगलैंड के अति प्राचीन निवासी केल्टिक भाषा बोलते थे। इसलिये एवान (नदी) ऊज़ (पानी) आदि कुछ नाम केल्टिक भाषा के हैं। सेवर्न, ट्रेएट, टेम्स आदि नाम प्राचीन समय से बहुत कुछ बदल गये।

केल्टिक नाम अधिकतर स्काटलैंड और वेल्स में मिलते हैं। इसका कारण यह है कि एंगिलू और सेक्सन लोगों ने इङ्गलैंड पर आक्रमण करके उनके गांवों को नष्ट कर दिया और उन लोगों को वेल्स और स्काटलैंड की ओर भगा दिया।

इङ्गलैंड के अधिकतर पुराने नाम रोमन कालीन हैं। रोमन लोगों ने इङ्गलैंड को जीत लिया था। गवर्नर और सिपाही रोमन थे। लेकिन किसान और व्यापारी ब्रिटिश थे। गवर्नर बड़े बड़े नगरों में रहते थे। यही रोमन लोगों ने किले बनवाये थे। किले बन्द नगर एक दूसरे से सीधी सड़कों से जुड़े हुये थे। इन्हीं सड़कों पर रोमन सिपाही एक किले बन्द नगर से दूसरे किले बन्द नगर को जमाया करते थे। लेकिन भाषा में किले को कास्ट्रा कहते हैं। उस समय के अंग्रेज़ इसे बिगाड़ कर कास्टर उस नगर का नाम था जहां इङ्गलैंड की हान नदी के ऊपर किला बना था। कुछ अंग्रेज़ कास्ट्रा को बिगाड़ कर चेस्टर इसी से मैनचेस्टर, रोचेस्टर आदि नगरों के नाम पड़े। कुछ अंग्रेज़ चेस्टर के स्थान पर सेस्टर कहने लगे। वोरचेस्टर और ग्लोसेस्टर नाम

पड़े। कुछ लोगों ने सेस्टर को भी छोटा करके एटर कहने लगे। इक्सेटर नाम इसी से पड़ गया।

एंगिल और सैक्सन लोग प्रायः गांवों और छोटे नगरों में बस गये उनके नाम के अन्त में हैम शब्द आता है जो होम या गृह का अपभ्रंश है। जिस नगर में वोकिंग वंशस गया वह वोकिंघम कहलाने लगा। कुछ नगरों के अन्त में टान या टन शब्द आता है जिसमें अपभ्रंश टाउन है। जिस नगर में अंग्रेज़ों का वाशिंग बस गया वह वाशिंगटन कहलाने लगा। एंगिल लोग इङ्गलैंड के पूर्वी भाग में बसे वह ईस्ट एंग्लिया कहलाने लगा। जिस पूर्वी भाग में सैक्सन लोग बसे वह इसेक्स कहलाने लगा। बीच वाला भाग मिडिल सेक्स और दक्षिणी भाग ससेक्स कहलाने लगा। जिस नगर के भाग (शेअर) में जो प्रदेश पड़ा वह उसका शायर कहलाने लगा। जैसे आक्सफर्ड शायर जिन नगरों में (डेन मार्क के लोग) आकर बस गये उनके अन्त में बी शब्द लगा रहता है जैसे डर्बी ह्विटबी इत्यादि। डॉनिश लोग अधिकतर उत्तर में तट के समीप या नदियों के किनारे बसे थे। इसलिये यह नाम

भी इसी ओर पाये जाते हैं। नार्वे के लोग प्रायः द्वीपों में आकर बसे। जिन द्वीपों के नाम ईकारान्त हैं वे इन्हीं लोगों के रक्खे हुये हैं जैसे इंगलिश चेनल में जैसी ग्वेरन्सी, एलडर्नी आदि।

झीलों का जिला (लेक डिस्ट्रिक्ट)

इंगलैंड का उत्तरी-पश्चिमी कोना बड़ा रमणीक है। यहां २० मील लम्बे और २० मील चौड़े प्रदेश में ५० पहाड़ी चोटियां २००० फुट से अधिक ऊंची हैं। एक मध्यवर्ती केन्द्र से पहाड़ियां चारों ओर को फैली हुई हैं। पहाड़ियों के बीच में गहरी घाटियां या डेल हैं। इन घाटियों में लम्बी तंग झीलें स्थित हैं। यह झीलें हिमकाल में बनी थी। झीलों के जिले का दृश्य बड़ा मनोहर है। इसी से यहां प्रतिवर्ष सैकड़ों यात्री छुट्टी बिताने और प्रकृति का आनन्द लेने आते हैं। विंडरमियर झील यहां की सब से बड़ी झील है। यह ११ मील लम्बी और १ मील चौड़ी है। झील के किनारे जंगल से ढके हैं। किनारों के ऊपर घास से

ढकी हुई पहाड़ियां उठी हुई हैं। कुछ चोटियों पर चढ़ना कठिन है। वे एक दम सपाट है। स्केफेल और हेल्वेलिन के बीच में पहाड़ सब से अधिक ऊंचे हैं। स्केफेल चोटी इंगलैंड भर में सब से अधिक ऊंची है। इस की उंचाई ३००० फुट से कुछ अधिक है। इंगलैंड के इस सर्वोच्च भाग से निकल कर नदियां चारों ओर को बहती हैं। कुछ नदियां आगे बहकर लम्बी और तंग झीलों में बदल जाती हैं। इस भाग में झीलों की अधिकता है। इसी से इसे झीलों का ज़िला कहते हैं। इस भाग में इंगलैंड भर में सब से अधिक पानी बरसता है। कभी कभी यहां वर्ष भर में १५० इंच पानी है। इन पर्वतों को कम्ब्रियन पर्वत नाम से पुकारते हैं। यह कम्बरलैंड, और उत्तरी लंकाशायर में फैले हुये हैं। प्रबल वर्षा होने से यहां के झीलों में सदा पानी भरा रहता है और यहां के प्रपात बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं।

डर्वेंएट वाटर झील बड़ी सुन्दर है। इसके उत्तरी सिरे पर डर्वेंएट और ग्रेटा नदियों का संगम है। संगम के पास ही कोस्विक नगर स्थित है। यहां यात्री प्रायः आया करते हैं। ग्रेफाइट मिल यहीं पेंसिलें भी बनाई जाती हैं। डर्वेंएट वाटर झील में कई मनोहर द्वीप हैं। झील के एक सिरे से उत्तर की ओर स्किडा चोटी दिखाई देती है। दूसरे पर लोडोर प्रपात है।

डर्वेण्ट वाटर में कभी कभी तली के सड़े हुये पौधों में गैस भर जाती है। इससे वे द्वीप के समान ऊपर तैरने लगता है। दूसरी ढालों पर गड़रिये भेड़ें चराते हैं। भेड़ों को भयानक स्थानों पर जाने से रोकने के लिये इन पहाड़ों पर जंगली बकरे बड़ी सहायता देते हैं। जहाँ बकरे चरते हैं वहां भेड़ें जाना पसन्द नहीं करती हैं। इससे वे संकटों से बच जाती हैं। कुछ स्थानों पर यहां पीट मिलता है। इस प्रदेश में वर्डस्वर्थ आदि अंग्रेज़ कवि और रस्किन आदि ने कुछ समय तक निवास किया है।

इस प्रदेश के डन्मेल दर्रे के विषय में विचित्र कथा है। कहते हैं कि पुराने समय में राजा डन्मेल यहां के मूल निवासी पिक्ट लोगों के ऊपर राज्य करता था। एडगर नाम का सैक्सन नेता उसका मुकुट छीनने यहां आया था। इसी दर्रे में युद्ध हुआ। पहले डनमेल की विजय होती दिखाई दी। लेकिन डन्मेल के साथियों ने विश्वासघात किया। अतः डन्मेल मारा गया। और सैक्सन आक्रमणकारियों की विजय हुई। लेकिन डन्मेल ने अपना मुकुट सेक्सनों के हाथ में नहीं पड़ने दिया। उसके स्वामिभक्त अनुयाई मुकुट को लेकर भाग निकले और उन्होंने उसे एक गहरे कुन्ड में डाल दिया कहते हैं वह अब तक वहीं पड़ा है।

संक्षिप्त इतिहास

इंगलैंड का प्राचीन इतिहास अंधकारमय है। प्राचीन मूल निवासी पत्थरों के अस्त्र-शस्त्र चलाते थे। कभी कभी वे हड्डियों पर पशुओं के चित्र खींचते थे। ब्रिटेन में बाहर से आने वाले लोग सम्भवतः गाल थे जो स्काटलैंड और आयरलैंड में रहते थे। इनके बाद ब्रिथन लोग आये जिससे इस द्वीप का नाम ब्रिटेन पड़ गया। वेल्श लोग इन्हीं के वंशज हैं। कहा जाता है फोनिशियन, कार्थेजियन और यूनानी लोग भी यहां कभी कभी आया करते थे। ब्रिटन (ब्रिटान) लोगों में राजा शासन करते थे। उनके यहां गाय बहुत थीं। वे मुर्गी खरगोश और बतख भी शौक के लिये पालते थे लेकिन इनका मांस नहीं खाते थे।

इनके पुजारी ड्रूइड कहलाते थे। ड्रूइड पुजारी धर्म सम्बन्धी सभी कार्य करते थे। वे यज्ञ करते थे और शकुनों की व्याख्या करते थे। वे न्यायाधीश और शिक्षक का भी काम करते थे। जो मनुष्य उनके निर्णय को नहीं मानता था। उसका बहिष्कार कर दिया जाता था। वे अपने शिष्यों को असंख्य पद मुखाग्र करा दिया करते थे। कुछ शिष्य उनके यहां २० वर्ष तक विद्या

ग्रहण करते थे। वे धार्मिक शिक्षा को अक्षरों में नहीं लिखते थे। व्यवहार की विद्या यूनानी ग्रीक अक्षरों में लिखी जाती थी। ड्रूइड लोग आत्मा को अमर मानते थे। उनका विश्वास था कि मरने के बाद मनुष्य शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण कर लेता है। यह लोग बुध शुक्र आदि कई देवताओं को मानते थे। वे सूर्य की भी उपासना करते थे। सूर्य भगवान के लिये वे पत्थर के गोल मन्दिर बनाते थे। इनके भग्नावशेष स्टोन हेंज के पास मिलते हैं। यह लोग मुर्दों को गाड़ने की अपेक्षा जलाना अधिक पसन्द करते थे। जलाने के बाद मुर्दे की राख को वे एक मिट्टी के बर्तन में भरकर गाड़ देते थे।

ईसा से ५५ वर्ष पूर्व जूलियस सीजर ने इंगलैंड पर चढ़ाई की। इसके बाद इंगलैंड के इतिहास का ठीक ठीक पता चलता है। ८४ ईस्वी तक फर्थ आफ फोर्थ के दक्षिण का समस्त भाग रोमन शासन में आ गया। १२२ ईस्वी में रोमन सम्राट हेड्रियन टाइन से साल्वे नदी तक ७० मील लम्बी दीवार बनवाई। जिस से उत्तर के पिक्ट लोग दक्षिणी भाग पर आक्रमण

न कर सकें। पिक्ट लोग अपने शरीर को रंग और गोद लेते थे। वे केल्टिक थे। रोमन लोगों ने कई शताब्दियों तक इंगलैंड में अच्छा शासन किया। उन्होंने यहां किले और सड़कें बनवाईं। इसके बाद उनका शासन ढीला पड़ गया ४०६ ईस्वी में रोमन लोग इङ्गलैंड को छोड़कर अपने (इटली) देश को लौट गये। रोमन लोगों ने अपने शासनकाल में ब्रिटेन में कई प्रकार के सुधार किये। उन्होंने ब्रिटेन के भिन्न-भिन्न फिरकों को आपस में लड़ने से रोका और देश में शान्ति स्थापित की। उनके समय में ब्रिटेन में कई नये पौधे और पशु लाये गये। उन्होंने ब्रिटेन में विशाल भवन, मार्ग, और किले बनवाये। लेकिन उन्होंने ड्राइड पुजारियों को बुरी तरह सताया। उनके धर्म को नष्ट करके उन्होंने ब्रिटेन में ईसाई धर्म फैलाया।

रोमन लोगों के चले जाने पर ब्रिटेन लोग बड़े दुखित हुये। वे अपनी रक्षा करने में असमर्थ थे। उत्तर से पिक्ट (गाल) लोग पश्चिम से स्काट लोग और पूर्व से ट्यूटन लुटेरों के हमले होने लगे। अन्त में इनके हमलों से बचने के लिये ब्रिटेन लोगों ने

सैक्सन, एंगिल और जूट लोगों को बुलाया। उनकी सहायता के उपलक्ष में नेवागन्तुकों को थानेट द्वीप ठहरने के लिये दिया गया। लेकिन इन नये लोगों ने इस द्वीप से आगे बढ़ कर देश के कई भाग जीत लिये। छठी शताब्दी के आरम्भ में कुछ स्थानों पर इन्हें हार भी खानी पड़ी। लेकिन छठी शताब्दी के अन्त में पूरा ब्रिटेन इनके अधिकार में आ गया। प्राचीन निवासी मार डाले गये अथवा दास बना लिये गये। कुछ वेल्स के पहाड़ों में भाग गये। ८२७ में नये आक्रमण कारियों के छोटे छोटे राज्य मिलकर एक हो गये। वेसेक्स का राजा एग्बर्ट सर्व प्रधान बना।

नवीं शताब्दी में ब्रिटेन पर वाइकिंग नाम के लुटेरों के हमले होने लगे। यह समुद्री लुटेरे नार्वे, स्वीडन, डेन्मार्क और बाल्टिक द्वीपों से आते थे। ब्रिटेन में उन्हें लूट मार का बहुत सा सामान मिलता था। उन्हें किसी प्रकार के संकट का सामना नहीं करना पड़ता था। अतः वे ब्रिटेन पर बार बार आक्रमण करने लगे। ८६६ और ८६८ ईस्वी के बीच में इन डेन लोगों ने ईस्ट एंग्लिया और दक्षिणी नर्दम्ब्रिया पर

अधिकार कर लिया। इन्होंने स्कूल, गिरजे और भिक्षु गृहों को नष्ट कर दिया। जिस प्रदेश पर उन्होंने अधिकार किया उसे उन्होंने प्रायः निर्जन कर दिया। ८५१ ई० में एल्फ्रेड महान इंगलैंड की गद्दी पर बैठा। उसने किसी प्रकार इन आक्रमणकारियों को रोका। जिस प्रदेश को डेन लोगों ने जीता था वह उन्हीं के अधिकार में बना रहा। आगे चल कर यहां बसे हुये डेन लोग इंगलैंड की प्रजा बन गये। कुछ समय तक शान्ति बनी रही। ९८० ई० में नार्वे, स्वीडन और डेनमार्क की ओर से फिर आक्रमण हुआ। कभी इङ्गलैंड ने इन्हें रिश्वत देकर शान्त किया कभी उनसे युद्ध किया। इस प्रकार ३४ वर्ष तक युद्ध चलता रहा। अन्त में स्वीडन कास्वेन इङ्गलैंड का राजा बन गया। उसका बेटा केन्यूट इङ्गलैंड का बड़ा बुद्धिमान शासक था। उसने स्केण्डीनेविया का शक्तिशाली साम्राज्य बना दिया। लेकिन केन्यूट के मरने पर यह साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। १०४२ इङ्गलैंड का राज सिंहासन एडवर्ड (कन्फेसर) को मिला। वह नार्मन भाषा बोलता था। और (नार्मन) दरबारियों को चाहता था। १०६० ई०

में वेसेक्स की अर्ल हेरर्ड इङ्गलैंड का राजा हुआ। लेकिन नार्मण्डी के विलियम ने इङ्गलैंड का सिंहासन छीनने की इच्छा से एक बड़ी सेना इकट्ठी की। इसी समय नार्वे के राजा ने इङ्गलैंड पर आक्रमण किया। हेरल्ड ने स्टैम्फर्ड पुल के पास उत्तरी आक्रमणकारियों को हराया। लेकिन इसी समय विलियम इंगलिश चेनल को पार करके इङ्गलैंड में उतर आया था। जब हेरल्ड दक्षिण की ओर हेस्टिंग्स के रणक्षेत्र में विजयी विलियम से लड़ने गया तो वह खेत रहा। अंग्रेज़ बुरी तरह से हारे। नार्मन सेना की जीत हुई। अतः विलियम इंगलैंड का राजा हो गया। विजयी विलियम ने प्रथम पांच वर्ष सैक्सन नेताओं के विरोध को दमन करने में लगाये। इसके बाद वह शासन सुधार में लग गया। उसने गिरजे को सुधारा। जागीरदारों के अधिकार कम कर दिये और अंग्रेज़ी जागीरों की पैमायश डूम्स्डे नामक पुस्तक में दर्ज करवाई। डूम्स्डे को तयार कराने में अंग्रेज़ों ने विरोध किया। जो लोग खुल्लमखुल्ला विरोध करते थे उन्हें फांसी दी जाती थी।

१०८७ ई० में विजयी विलियम की मृत्यु हो

गई। उसका बड़ा बेटा राबर्ट नार्मण्डी का राजा हुआ। उसका दूसरा बेटा विलियम रूफस या लाल द्वितीय इंगलैंड का राजा हुआ। कुछ नार्मन जागीरदारों की जागीर दोनों देशों (इङ्गलैंड और नार्मण्डी) में थी। वे राबर्ट को इङ्गलैण्ड का भी राजा बनाना चाहते थे। इसमें उन्हें सफलता न मिली। विलियम के मरने पर उसका छोटा भाई ११०० ई० में हेनरी प्रथम इङ्गलैण्ड का राजा हुआ। हेनरी नार्मन होने पर भी अंग्रेज़ी बोल लेता था। वह इङ्गलैंड में ही पैदा हुआ था। उसने स्काटलैंड की अंग्रेज़ रानी की बेटी से ब्याह किया था। उसने अंग्रेज़ी प्रजा को प्रसन्न रखने के लिए उन्हें अधिकार पत्र या चार्टर दिया। नार्मन शासन-काल में इङ्गलैंड को दक्षिणी योरुप की सभ्यता से लाभ उठाने का अवसर मिल गया।

हेनरी प्रथम ने ११३५ ई० तक राज्य किया। मरते समय उसके कोई बेटा जीवित न था। १६ वर्ष की गड़बड़ी के बाद हेनरी प्रथम का पौत्र हेनरी द्वितीय इङ्गलैंड का राजा हुआ। हेनरी द्वितीय ने ११५४ से ११८९ तक राज्य किया। उसने जागीरदारों (बैरनों)

को दबाया। वह इङ्गलैंड के अतिरिक्त अधिकांश फ्रांस पर राज्य करता था। उसकी गिरजे (पादरी) से न बनी। उसके दो छोटे (रिचार्ड) और जान बेटे भी उससे बिगड़ गये। उन्होंने फ्रांस के राजा फिलिप से सहायता लेकर अपने पिता को ११८६ में हराया। कुछ ही समय में हेनरी द्वितीय की मृत्यु हो गई। रिचार्ड इंगलैंड का राजा हुआ। लेकिन उसका समय एक क्रूसेड यरूशलम के लिये तुर्कों से लड़ने और फ्रांसीसियों से लड़ने में बीत गया। ११६६ में हेनरी द्वितीय का सब से छोटा बेटा जान लैकलैंड इंगलैंड का राजा हुआ। उसके अत्याचार से पीड़ित होकर नार्मन जागीरदार अंग्रेज़ प्रजा से मिल गये। देश में विद्रोह हुआ। राजा को बाध्य होकर १२१५ में मेग्ना चार्टा नाम का अधिकार पत्र स्वीकार करना पड़ा। फ्रांस का राजा इंगलैंड के राजा को अपना ताबेदार समझता था। इस बार फ्रांस के राजा ने इंगलैंड के राजा जान लैकलैंड को अपने दरबार में बुलाया। लेकिन जब जान फ्रांस के दरबार में न गया तो फ्रांस के राजा फिलिप ने जान का आधे से अधिक राज्य (जो फ्रांस में था)

छीन लिया। भूमि के छिन जाने से ही उसे लैकलैंड (अपहृत भूमि) की उपाधि मिली।

जान के मरने पर १६२६ में हेनरी तृतीय इंगलैंड का राजा हुआ। हेनरी तृतीय ने १२७२ ई० तक राज्य किया। उसके समय में १२६५ ई० में पार्ल्यामेंट का आरम्भ हुआ। प्रत्येक शायर से २ नाइट और प्रत्येक शहर से २ प्रतिनिधि बुलाये गये। यही पार्ल्यामेंट के हाउस आफ कामन्स के प्रथम सदस्य थे। एडवर्ड प्रथम के शासन काल (१२७२ से १३०७ तक) में आदर्श पार्ल्यामेंट बनी। इसमें पादरी, नगर निवासी आदि सभी प्रकार के लोगों के प्रतिनिधि बुलाये गये।

१३३७ ई० में जब एडवर्ड तृतीय गद्दी पर बैठा तो उसने फ्रांस के कुछ प्रदेशों पर अपना अधिकार जमाना चाहा। इससे फ्रांस और इंगलैंड के बीच में १०० वर्ष का लम्बा युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध और क्रूसेड (यरूशलम को तुर्कों से छुड़ाने) के लिये बहुत धन की आवश्यकता पड़ी। यह धन नगरों से मिला। लेकिन इसके बदले में नगरों को कई विशेष अधिकार मिल गये। इसी बीच में इंगलैंड में प्लेग फैली जिससे

इंगलैंड की जनसंख्या आधी रह गई। गिरजे की दशा भी बिगड़ गई थी। पादरी अमीर थे जान विकलिफ ने घोषित किया कि पादरी निर्धन होने चाहिये किसानों की दशा बड़ी शोचनीय थी।

१३८१ ई० में किसानों का विफल विद्रोह हुआ १५०० मनुष्यों को फांसी दी गई। १३८४ में विकलिफ मर चुका था। लेकिन उसके अनुयायी लोलार्डों को तरह तरह का दंड मिला। रिचार्ड द्वितीय (१३७७—१३९९) के निरंकुश शासन का घोर विरोध हुआ। अतः राज सिंहासन उसके चचेरे भाई लैंकास्टर के ड्यूक को मिला। वह हेनरी चतुर्थ के नाम से सिंहासन पर बैठा। उसके बेटे हेनरी पंचम ने फिर फ्रांस की जागीर लेने का निश्चय किया। इस बार उसे कुछ सफलता मिली। यह तय हुआ कि फ्रांसीसी राजा के मरने पर यह जागीरदार हेनरी को मिले। हेनरी के मरने पर उसके शिशु हेनरी षष्ट को ओर से यह अधिकार पेश किया गया। इस समय फ्रांस की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गई थी। फ्रांस में एक दम निराशा छा गई थी। इसी समय कुमारी जोन आफ

आर्क की अध्यक्षता में फ्रांसीसी जनता ने विद्रोह का झंडा उठाया। केले और गियन को छोड़ कर और सब फ्रांसीसी प्रदेशों से अंग्रेज़ भगा दिये गये। कुछ ही समय में इंगलैंड में गृह कलह आरम्भ हो गई। लैंकास्टर का झंडे पर लाल गुलाब का चिन्ह था। उसके प्रतिद्वन्द्वी यार्कवंश के झंडे पर सफेद गुलाब का चिन्ह था। इसी से यह गृह युद्ध वार्स आफ रोज़ेज़ (गुलाबों की लड़ाई) के नाम से प्रसिद्ध है। यह गृह युद्ध तीस वर्ष तक चला। इस बीच में यार्क के एडवर्ड चतुर्थ, लैंकास्ट के हेनरी षष्ट, यार्क के एडवर्ड पंचम और रिचार्ड तृतीय ने राज्य किया। १४८५ में बरेस्वर्थ फील्ड में लैंकास्टर वंश के हेनरी टूडर ने रिचार्ड को हराया और मार डाला। इससे इसे तीस वर्ष के लम्बे युद्ध का अन्त हो गया। इस युद्ध के बीच में १४७१ ई० में विलियम कैक्स्टन ने वेस्ट मिनिस्टर में प्रथम मुद्राणालय (प्रिंटिंग प्रेस) स्थापित किया।

गुलाबों की लड़ाई (वार्स आफ़ रोज़ेज़) का एक महत्वपूर्ण फल यह हुआ कि सरदारों का प्रभुत्व

घट गया। राजा की शक्ति बढ़ गई। अतः ट्यूडर राजवंश ने १०० वर्ष तक निरंकुश शासन किया। हेनरी सप्तम इस वंश का प्रथम राजा था। उसने १४८५ से १५०६ तक राज्य किया। उसने यार्क के एडवर्ड चतुर्थ की पुत्री एलिज बेथ से व्याह करके दो (लैंकास्टर और यार्क राजवंश को मिला किया। हेनरी ने कई उपयोगी कानून बनाये। उसके समय में व्यापार और कारबार में भी उन्नति हुई। उसके मरने पर हेनरी अष्टम इंगलैंड का राजा हुआ। उसने १५०६ से १५४७ तक राज्य किया।

गद्दी पर बैठने के समय हेनरी केवल १८ वर्ष का था। वह बड़ा रूपवान था। लेकिन उसने अत्याचार पूर्ण शासन किया। उसने ६ बार व्याह किया। उसके समय में एक महत्वपूर्ण घटना हुई। वह रोम के बड़े पादरी (पोप) से लड़ बैठा। अतः इंगलैंड पोप के अंकुश से अलग हो गया। १५३४ में पार्ल्यामेंट ने एक कानून बनाया जिसके अनुसार राजा धर्म का रक्षक बन गया। वह इंगलैंड के चर्च गिरजे का प्रधान बन गया। कुछ ही समय में उसने इंगलैंड के

ईसाई महन्तों की जागीरें ज़ब्त करने और अपने पोषकों को बांट दी।

हेनरी अष्टम के मरने के बाद उसका बेटा एडवर्ड इंगलैंड का राजा (१५४७—५५) हुआ। वह १६ वर्ष की अवस्था में मर गया। १२ दिन तक हेनरी सप्तम की प्रपौत्री जेनग्रे ने राज्य किया। फिर एडवर्ड की सौतेली बहिन गद्दी पर बैठी। उसने जेनग्रे और उसके साथियों को मरवा डाला। मेरी केथलिक थी। उसने पोप के विरुद्ध पास किये गये नियमों को रद् कर दिया। साथ ही उसनें प्राटेस्टैंटों को जलाने का नियम फिर प्रचलित कर दिया। इंगलैंड के लोग चाहते थे कि मेरी किसी अँग्रेज़ से ब्याह करे। लेकिन मेरी ने स्पेन के राजा फिलिप के चचेरे भाई से ब्याह किया। फिलिप को प्रसन्न करने के लिये मेरी ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध में फिलिप का साथ दिया। इससे केले इंगलैंड के हाथ से छिन गया। १५५८ ई० में एलिजवेथ इंगलैंड की रानी हुई।

एलिजवेथ का शासनकाल (१५५८-१६३) इंगलैंड के लिये बड़ा प्रतिभाशाली समय था। ड्रेक,

फ्राबिशर और दूसरे साहसी मल्लाहों ने दूसरे देशों का पता लगाया और ब्रिटिश साम्राज्य को बढ़ाया ब्रिटिश व्यापार का बड़ी उन्नति हुई। इसी ईस्टइंडिया कम्पिनी की स्थापना हुई। दूसरी व्यापारिक कम्पिनियां भी बनीं। इससे इङ्गलैंड की सम्पत्ति बहुत बढ़ गई। १५६८ में स्काटलैंड की रानी मेरी भाग कर इङ्गलैंड चली आई। रानी एलिज़बेथ ने उसे कैद कर लिया। केथलिक लोगों ने मेरी को इङ्गलैंड के सिंहासन पर बिठाने के लिये कई षडयंत्र रचे। कहते हैं एक षडयंत्र में मेरी भी शामिल थी। एलिजबेथ ने उसे फांसी दिलवा दी। इसका बदला लेने और इंगलैंड में केथलिक धर्म को फिर से स्थापित करने के लिये स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय ने इङ्गलैंड पर चढ़ाई करने की तयारी की। अँग्रेज़ी सेना ने हालैंड में स्पेन के विरुद्ध राज विद्रोह भी करवा दिया था। अँगेज़ लुटेरे नई दुनिया से स्पेन को आने वाले सोने चांदी से लदे हुये जहाजों को प्रायः लूट लेते थे। इन सब अपराधों का दंड देने के लिये स्पेन के राजा ने एक अजेय अर्माडा एकत्रित किया। लेकिन तूफान और अँग्रेज़ी मल्लाहों ने स्पेन के अर्माडा को नष्ट कर दिया।

इसके बाद स्पेन का ह्रास और इगलैण्ड का विकास होता गया। एलिजबेथ का शासन काल अँग्रेजी साहित्य में स्वर्णयुग कहलाता है। इसी समय शेक्सपियर, स्पेन्सर जान्सन आदि साहित्यकारों ने अँग्रेज़ी साहित्य का भंडार भरा।

एलिजबेथ ट्यूडर वंश की अन्तिम रानी थी। १६०३ में उसकी मृत्यु के बाद मेरी क्वीम आफस्काटस का बेटा जेम्स प्रथम इङ्गलैंड का राजा हुआ। वह स्चुअर्ट वंश का राजा था। वह स्काटलैंड का राजा था ही। जब वह इंगलैंड की गद्दी पर बैठा तो दोनों देश एकता के सूत्र में बँध गये। स्चुअर्ट राजा समझते थे कि उन्हें ईश्वर की ओर से मनुष्यों के ऊपर राज्य करने का अधिकार मिला हुआ है। इस अन्धविश्वास के साथ साथ उनमें अच्छा शासन करने की योग्यता भी न थी। १६२५ ई० में जेम्स का लड़का चार्लर्स प्रथम इंगलैंड का राजा हुआ। वह स्पेन से युद्ध छेड़ रहा था। जब पार्ल्यामेन्ट ने इस युद्ध के लिये खर्च न दिया तो वह पार्ल्यामेंट से लड़ बैठा। प्रथम १५ वर्ष तक उसने बिना पार्ल्यामेंट के ही शासन किया। उसने अपनी इच्छा से

ही कर लगाया और ऋण उधार लिया। उसने प्राटेस्टेण्टधर्म में भी हस्तक्षेप किया। उसने गिरजे में नये रस्म चलाये। उसने प्राटेस्टेण्ट स्काटलैण्ड में एपिस्कोपेसी फैलाने का प्रयत्न किया। स्काटलैंड में इस धार्मिक हस्तक्षेप से राजविद्रोह आरम्भ हुआ। इस समय राजा के पास धन न था। अतः उसे पार्ल्यामेंट को बुलाना पड़ा। पिम और हैम्पडन ने पार्ल्यामेंट में शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न किया। राजा ने उन्हें गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। इससे इंगलैंड में गृह-कलह आरम्भ हो गई। एपिस्कोपिलियन सरदारों ने राजा का साथ दिया। पार्ल्यामेंट की ओर मध्यम श्रेणी के लोग व्यापारी और किसान थे। इन लोगों के बाल छोटे थे। अतः यह राउंडहेड कहलाते थे। राजा के अनुयाई के वेलियर कहलाते थे।

गृह युद्ध आरम्भ में पार्ल्यामेंट प्रायः एक ही दल था। इस दल के लोग प्रेस्बीटेरियन धर्म के मानने वाले थे। इनकी राजनीति नरदल की थी। जब गृह युद्ध लम्बा चला तब यह एक कट्टर दल का विकास हुआ जो शासन की बागडोर राजभक्तों और प्रेस्बेटेरियन लोगों से छीनने

का प्रयत्न करने लगा। इस दल का नेता आलिवर ने पार्ल्यामेंट के लिये एक सेना एकत्रित की। उसके सिपाही उत्साह और अनुशासन में बड़े पक्के थे। वे आयरन साइडस कहलाते थे। अतः कई लड़ाइयों में क्राम्वेल की विजय हुई। नेस्बी की लड़ाई में राजा की सेना बुरी तरह से हारी। दूसरे वर्ष चार्ल्स ने अपने आप को स्काट लोगों के हाथ में समर्पण कर दिया। स्काट लोगों ने राजा को इंगलिश पार्ल्यामेंट के हाथ सौंप दिया। यहां तीन वर्ष तक तरह तरह के दांव पेंच चले। अन्त में सेना ने पार्ल्यामेंट के प्रेस्बीटेरियन सदस्यों को भगा दिया और १६४६ की तीस जनवरी को राजा को फांसी दे दी गई। इससे इण्डिपेंडेण्ट दल को छोड़ कर शेष सभी दल क्राम्वेल ने अपने विरोधियों को दबा दिया। योरुप के कुछ देश भी क्राम्वेल गद्दी पर बैठा।

रिचार्ड क्राम्वेल अपने पिता के समान योग्य न था सेना के कहने पर उसने राजा के पद से त्याग पत्र दे दिया इधर प्यूरिटन लोगों के कट्टर और कठोर शासन से इंगलैंड के लोग तंग आ गये थे। १६६० ई० में चार्ल्स

प्रथम का बेटा चार्ल्स द्वितीय राज्य करने के लिये बुलाया गया। चार्ल्स द्वितीय को भोग विलास अधिक प्रिय था। १६८५ ई० में उसकी मृत्यु हो गई। उसका भाई जेम्स द्वितीय इंगलैंड का राजा हुआ। जेम्स रोमन केथलिक था। उसने निरंकुशता से शासन करना आरम्भ किया। वह अपनी प्रजा की इच्छाओं का ध्यान नहीं करता था। उसने इङ्गलैंड में रोमन केथलिक धर्म स्थापित करने का निश्चय किया। इसका फल यह हुआ कि उसे इंगलैंड से भागना पड़ा। इंगलैंड का सिंहासन जेम्स की लड़की मेरी और उसके पति विलियम आफ आरेंज को मिला। इस स्थिति से पार्ल्यामेंट ने पूरा लाभ उठाया। बिल आफ राइट्स (अधिकार सम्बन्धी कानून) पास किया गया। इसके अनुसार केबिनेट या राज्य की कार्य कारिणी सभा राजा के प्रति उत्तरदाई होने के बदले पार्ल्यामेंट के प्रति उत्तरदाई हो गई।

१७०२ ई० में विलियम आफ आरेंज के मरने पर जेम्स द्वितीय की दूसरी लड़की एन इङ्गलैंड की रानी हुई। एन कोई प्रतिभाशाली रानी न थी। फिर भी उसके समय में इङ्गलैंड का गौरव बढ़ गया।

स्पैनिश सक्सेशन की लड़ाई में इंगलैंड, हालैंड और जर्मनी एक ओर होकर फ्रान्स से लड़ने लगे। मार्लबरी की कई स्थानों पर विजय हुई। जिब्राल्टर अँग्रेजों के हाथ में आ गया। इस युद्ध के अन्त में जो सन्धि हुई उसके अनुसार अमरीका में इंगलैंड को नोवास्कोशिया न्यूफाउंडलैण्ड और हडसन के समीप का बहुत बड़ा भाग इंगलैंड को मिल गया। १७०७ ई० में इङ्गलैण्ड ग्रेट ब्रिटेन नाम से एक दूसरे से मिल गये। १७१३ ईस्वी में रानी एन की मृत्यु हो गई। उसके १७ बच्चे उसके जीवनकाल में ही मर गये थे। जेम्स प्रथम का प्रपौत्र (हेनोवर का इलेक्टर) जार्ज प्रथम नाम से इंगलैंड का राजा हुआ। जार्ज प्रथम अपनी जर्मन जागीर में अधिक समय लगाता था अतः इङ्गलैण्ड का शासन भार उसने प्रायः केबिनेट या कार्यकारिणी सभा के हाथ में छोड़ दिया। राजा की अपेक्षा प्रधान मन्त्री शासन की बागडोर अपने हाथ में अधिक रखने लगा। जार्ज द्वितीय ने १७२७ से १७६० तक इङ्गलैण्ड में शासन किया। इस बीच में इंगलैण्ड ने दो बार फ्रान्स से युद्ध किया। दूसरा युद्ध सप्तवर्षीय युद्ध कहलाता है।

यह सात वर्ष तक चला। इस में इंगलैंड की विजय हुई। कनाडा और हिन्दुस्तान में फ्रांसीसी अधिकृत प्रदेशों को छीन कर इङ्गलैंड ने अपने विशाल साम्राज्य की नींव डाली।

जार्ज तृतीय ने १७६० से १८२० तक राज्य किया। उसने दलों को नष्ट करके अपने प्रभुत्व को स्थापित करने का प्रयत्न किया। उसके प्रधान मन्त्री ने अमरीकन उपनिवेशों के लिये अत्याचार पूर्ण कानून बनाये इससे संयुक्त राष्ट्र अमरीका इङ्गलैंड के अंकुश से अलग हो गया। इस शक्ति की कुछ पूर्ति इङ्गलैंड के राजनीतज्ञों ने हिन्दुस्तान और संसार जो दूसरे भागों को छीन कर अवश्य कर ली।

इसी समय फ्रांस में राज्यक्रान्ति हुई। कुछ ही समय में नेपोलियन योरुप भर में सर्व प्रधान बन गया। लेकिन नेल्सन ने नील और ट्राफलगर की समुद्री लड़ाइयों को जीत कर ब्रिटेन की समुद्री शक्ति अद्वितीय कर दी। ब्रिटेन के बढ़ते हुये साम्राज्य का सब से बड़ा शत्रु नेपोलियन था। अतः ब्रिटेन ने योरुप में कई राज्यों को नेपोलियन के विरुद्ध भड़का कर और

उन्हें आर्थिक और सैनिक सहायता देकर अन्त में वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन की शक्ति का अंत कर दिया। इस कार्य में १७९३ से १८१५ तक ब्रिटेन का अरबों रुपया खर्च हुआ लेकिन ब्रिटेन के साम्राज्य पर क्रूर दृष्टि डालने वाली कोई शक्ति योरुप में कम से कम कुछ समय के लिये शेष न रह गई। इस समय नेल्सन के अतिरिक्त विलियम पिट और महाराष्ट्रीय स्पेन और वाटरलू युद्ध का विजेता आर्थर वेलेजली ड्यूक आफ वेलिंग्टन ने ब्रिटेन की शक्ति और साम्राज्य को बढ़ाने में बड़ा भारी काम किया। नेपोलियन अपनी अजेय सेना को ब्रिटेन में ले आने में सफल हो जाता। तब तो वह ब्रिटेन को कुछ ही समय में जीत लेता और भूमण्डल का राजा हो जाता। लेकिन नेल्सन ने उसकी जहाजी शक्ति छिन्न-भिन्न कर दी। पिट ने अपनी कूटनीति से योरुप में ही उसके शत्रु और विरोधी राज्य तयार कर दिये। वेलिंग्टन ने इन विरोधी शक्तियों को जुटाकर नेपोलियन की शक्ति छिन्न-भिन्न कर दी।

जार्ज चतुर्थ ने १८२० से १८३० तक राज्य किया।

उसके बाद विलियम चतुर्थ गद्दी पर बैठा। १८३७ में विलियम की मृत्यु हो गई। तभी महारानी विक्टोरिया गद्दी पर बैठीं। महारानी विक्टोरिया ने १८३७ से १९०१ तक राज्य किया।

महारानी विक्टोरिया के शासनकाल में इंगलैंड में बड़ी उन्नति हुई। इंगलैंड की जनसंख्या १,४०,००,००० से बढ़कर ३,२०,००,००० हो गया। उसके कारबार व्यापार और सम्पत्ति में जो वृद्धि हुई उसका अनुमान लगाना कठिन है। भिखारियों और बेकारों की संख्या एक दम कम हो गई। इंगलैंड के उपनिवेशों और साम्राज्य में और अधिक वृद्धि हुई। इसी समय में रेलवे लाइनों में बड़ी बृद्धि हुई। १८३८ में पेनी पोस्टेज से डाक घर बहुत बढ़ गये। १९०१ ई० में मोटर कार का चलना आरम्भ हुआ।

महारानी विक्टोरिया के शासनकाल में ही ब्रिटेन दूसरे देशों की राजनीति में भी हस्तक्षेप करने लगा। बेल्जियम को हालैंड से पृथक किया। यूनान को तुर्की के चंगुल से पृथक किया गया। इसी समय रूस ने पीड़ित ईसाइयों का पक्ष लेकर तुर्की से युद्ध

छेड़ा। ब्रिटेन को सन्देह हुआ कि इस युद्ध से रूस काला सागर की कुंजी कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार कर लेगा और उसके समुद्री मार्ग में बाधा डालेगा। अतः ब्रिटेन ने तुर्की का साथ दिया और रूस से युद्ध छेड़ दिया। युद्ध क्राइमियन युद्ध नाम से प्रसिद्ध है। यह पहला युद्ध था। जिसका विवरण समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। पेरिस की सन्धि से यह युद्ध समाप्त हो गया। कालासागर सभी व्यापारी जहाजों के लिए खुल गया।

१८५६ ई० तक प्रायः समस्त भारतवर्ष ईस्ट इण्डिया कम्पिनी के अधिकार में आ गया था। लेकिन १८५७ ई० में विद्रोह हुआ। इसके अन्त में ईस्ट इण्डिया कम्पिनी का अन्त हो गया। कम्पिनी के स्थान पर भारतवर्ष में ब्रिटिश सरकार का शासन हो गया।

कनाडा के सम्बन्ध में कई कानून बने। कनाडा में ६०,००० फ्रान्सीसी बसे हुये थे। इतने ही राजभक्त अंग्रेज़ संयुक्त राष्ट्र अमरीका से मांग कर यहां चले आये। कुछ दिनों की गड़बड़ी के बाद कनाडा की

स्वायत्त शासन मिल गया। आस्ट्रेलिया में नये प्रदेशों की खोज हुई। वहां भी गोरे लोगों को स्वराज्य मिल गया। १८३९ में न्यूज़ीलैंड में उपनिवेश बसाने के लिये न्यूज़ीलैंड कम्पिनी की स्थापना हुई। पहले यहां के मूल निवासी माओरी लोगों से युद्ध हुये। अंग्रेज़ों को स्वायत्त शासन मिल गया।

दक्षिणी अफ्रीका के कुछ भागों पर नेपोलियन युद्ध में अंग्रेज़ों ने अपना अधिकार कर लिया। यहां हालैंड से आये हुये डच (बोयर) लोग भी बस गये थे। १८५३ ई० में केपकलोनी में बसे हुये अंग्रेज़ों को उत्तरदायी शासन मिल गया। १८६९ से १८७१ तक बसूटो और ग्रीका फिरकों के देशों पर इंगलैंड ने अधिकार कर लिया। ग्रीक्वा लोगों के प्रदेश में ही हीरे की खानों का पता लगा। १८७७ में ब्रिटेन ने ट्रान्सवाल को मिला लिया। वीर ज़ुलो लोग भी कुचल डाले गये। १८८७ ई० में जूल लैंड ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। इसी समय बोअर प्रदेश में १८८६ ई० में सोने की विशाल खानों का पता लगा। सैकड़ों अंग्रेज़ सोने की खोज में

यहां आने लगे। कुछ ही समय में बोअर लोगों से युद्ध छिड़ गया। बोअर लोग जी जान से वर्षों तक लड़े। लेकिन ब्रिटिश साम्राज्य की सेना के सामने उन्हें हार खानी पड़ी। मिश्र और सूडान में भी ब्रिटिश प्रभुत्व बढ़ गया। पर सूडान के विद्रोह में कुछ समय के लिये ब्रिटिश सत्ता उठ गई। ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका कम्पिनी ने पूर्वी अफ्रीका पर अपना अधिकार जमाया। अन्त में उसने अपने अधिकृत प्रदेश ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया। फिर योरूपीय शक्तियों ने अफ्रीका को आपस में बांटा। इस बटवारे के अनुसार नाइजीरिया और कुछ अन्य प्रदेश ब्रिटेन को मिले।

नेपोलियन युद्ध के समय ब्रिटेन ने पूर्वी द्वीप समूह, मलय प्रायद्वीप, और दूसरे सब देश डच लोगों से छीन लिये। सन्धि हो जाने पर कुछ भाग लौटा दिये गये। लेनिक पेनांग, सिंगापुर और मलक्का पर ब्रिटिश अधिकार बना रहा। चीन वाले अंग्रेज़ सौदागरों से अफ़ीम नहीं लेना चाहते थे। लेकिन अफीम के व्यापार से इंगलैंड को बड़ा लाभ होता था। इसके फलस्वरूप इंगलैंड और चीन में १८३९ से

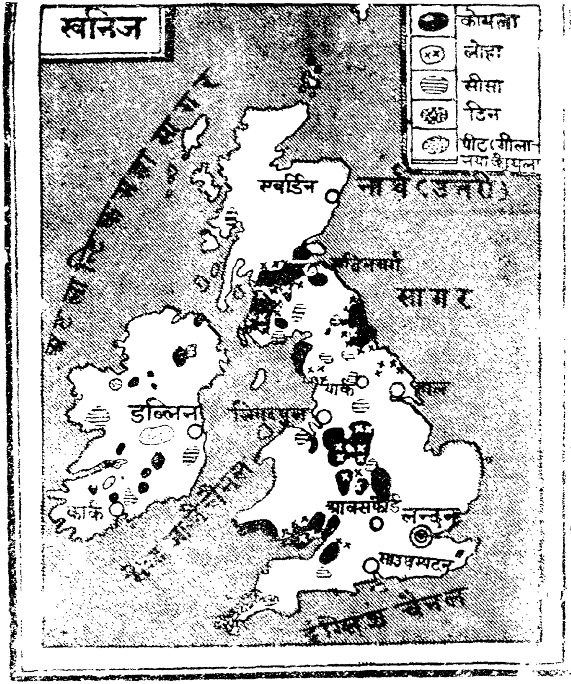
१८४२ तक युद्ध चला। चीन को हार हुई। ब्रिटेन ने हांगकांग छीन लिया। महारानी विक्टोरिया के समय में शासन सम्बन्धी कई सुधार हुये। महारानी विक्टोरिया के मरने पर सप्तम एडवर्ड ब्रिटिश सिंहासन पर बैठे। इन्होंने योरुप में शान्ति स्थापित करने का बड़ा प्रयत्न किया। इनके बाद पंचम जार्ज ब्रिटिश सम्राट हुये। इनके समय में पहला महासमर छिड़ा जो १९१४ से १९१८ तक चलता रहा। इस युद्ध के अन्त में ब्रिटिश साम्राज्य और अधिक हो गया। तुर्की और जर्मनी के कई प्रदेशों पर राष्ट्र संघ की ओर से ब्रिटेन को शासन करने का अधिकार पत्र मिल गया। इराक़, ट्रान्स जार्डन, पेलेस्टाइन, स्वेज़नहर, सूडान, टैगानीका और कुछ अन्य प्रदेश पर ब्रिटेन का शासन हो गया। प्रथम महासमर के अन्त में सभी देशों के साथ ब्रिटेन की भी दशा कुछ समय तक बिगड़ी रही। इस काल में आयरलैंड और पेलेस्टाइन में अशान्ति रही। भारतवर्ष में भी स्वाराज्य के लिये आन्दोलन हुआ। आयरलैंड तो स्वाधीन हो गया। लेकिन ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य देशों की स्थिति में कोई विशेष

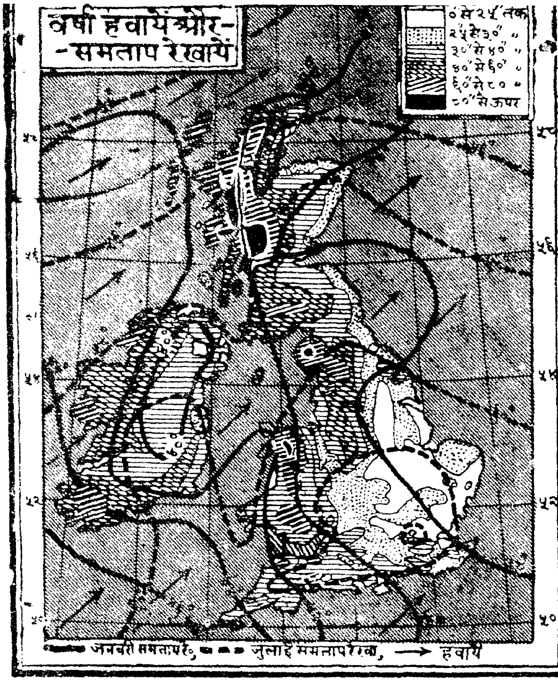
अन्तर नहीं हुआ। संसार में शान्ति रखने के लिये ऊपर से तो राष्ट्र संघ द्वारा कई प्रयत्न हुये। लेकिन आक्रमणकारी राज्यों को रोकने के लिये कुछ भी नहीं किया गया। इटली ने एबीसीनिया दबा लिया। जापान ने मंचूरिया छीन लिया। ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ने लड़ाई को रोकने के लिये जो प्रयत्न किये उनका उल्टा फल हुआ। जर्मनी ने सैनिक तयारी पूरी कर ली। अन्त में जर्मनी ने जब पोलैण्ड पर आक्रमण किया तो इंगलैण्ड ने भी अपने साम्राज्य की रक्षा के लिये फ्रांस से मिल कर युद्ध छेड़ दिया। आरम्भ में जर्मनी की सैनिक शक्ति के सामने अंग्रेज़ी सेनाओं को बेल्जियम और नार्वे में हारकर लौटना पड़ा। हिटलर योरुप में सर्व प्रधान हो गया। इंगलैंड पर लगातार हवाई हमले होने लगे। समुद्र में उसके जहाज़ डूबने लगे। पर जब जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया तो इङ्गलैण्ड को सांस लेने और पूरी सैनिक तैयारी करने का अवसर मिल गया। आगे चलकर जब संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने युद्ध में ब्रिटेन का साथ दिया तब तो इंगलैण्ड में आशा की झलक दिखाई

देने लगी। लेकिन इसी बीच में जापान युद्ध में कूद पड़ा। हांगकांग, शंघाई, सिंगापुर, बोर्नियो, मलय प्रायद्वीप और बरमा को छीन कर जापान ने सुदूर पूर्व में ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य कम से कम कुछ समय के लिये अस्त कर दिया। पर अफ्रीका में ब्रिटेन ने इटली साम्राज्य का अन्त कर दिया। अमरीकन और ब्रिटिश सेनाओं ने एक ओर से रूसी सेनाओं ने दूसरी ओर से जर्मन सेनाओं को पीछे हटाते हटाते प्रधान जर्मनी में पहुँचा दिया है। वर्तमान युद्ध के अन्त में ब्रिटिश साम्राज्य का क्या स्वरूप होगा इसे इस समय बतलाना कठिन है। लेकिन बेल्जियम, इटली और यूनान में जो ब्रिटिश हस्तक्षेप हुआ उससे बहुतों को अटलांटिक चार्टर पर सन्देह होने लगा। भारत भाग्य का निर्णय ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के लिये बड़ी जटिल समस्या है। यदि भारतवर्ष में पूर्ण स्वराज्य स्थापित हो जाता है तो ब्रिटिश साम्राज्य को धक्का लगता है। यदि वे यहां अपना साम्राज्य स्थिर रखते हैं तो स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में बार बार दुहराई गई प्रतिज्ञाओं को संसार के सामने झूठा सिद्ध करते हैं। पर फ्रांस के पतन के बाद अँग्रेज़ों ने जो साहस दिखलाया और अकेले ही युद्ध जारी रखने का निश्चय किया वह इतिहास में चिर स्मरणीय रहेगा।


कृषि
गेहूँ
जौ
जई
सन
फल


जन संख्या नगर और मार्ग
लन्दन


खनिज
कोयला
लोहा
सीसा
टिन
पीट
एबर्डिन
सागर
यार्क
डब्लिन
कार्क
आक्सफोर्ड
लन्दन
साउथम्पटन


वर्षा हवायें और
समताप रेखायें
०" से २५" तक
२५" से ३०"
३०" से ४०"
४०" से ६०"
६०" से ८०"
८०" से ऊपर
५८
५६
५५
५२
५०
जनवरी समताप रे०, जुलाई समताप रेखा, → हवायें